ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

सहयोग राशि
₹ 20/ मात्र

मार्च, 2022

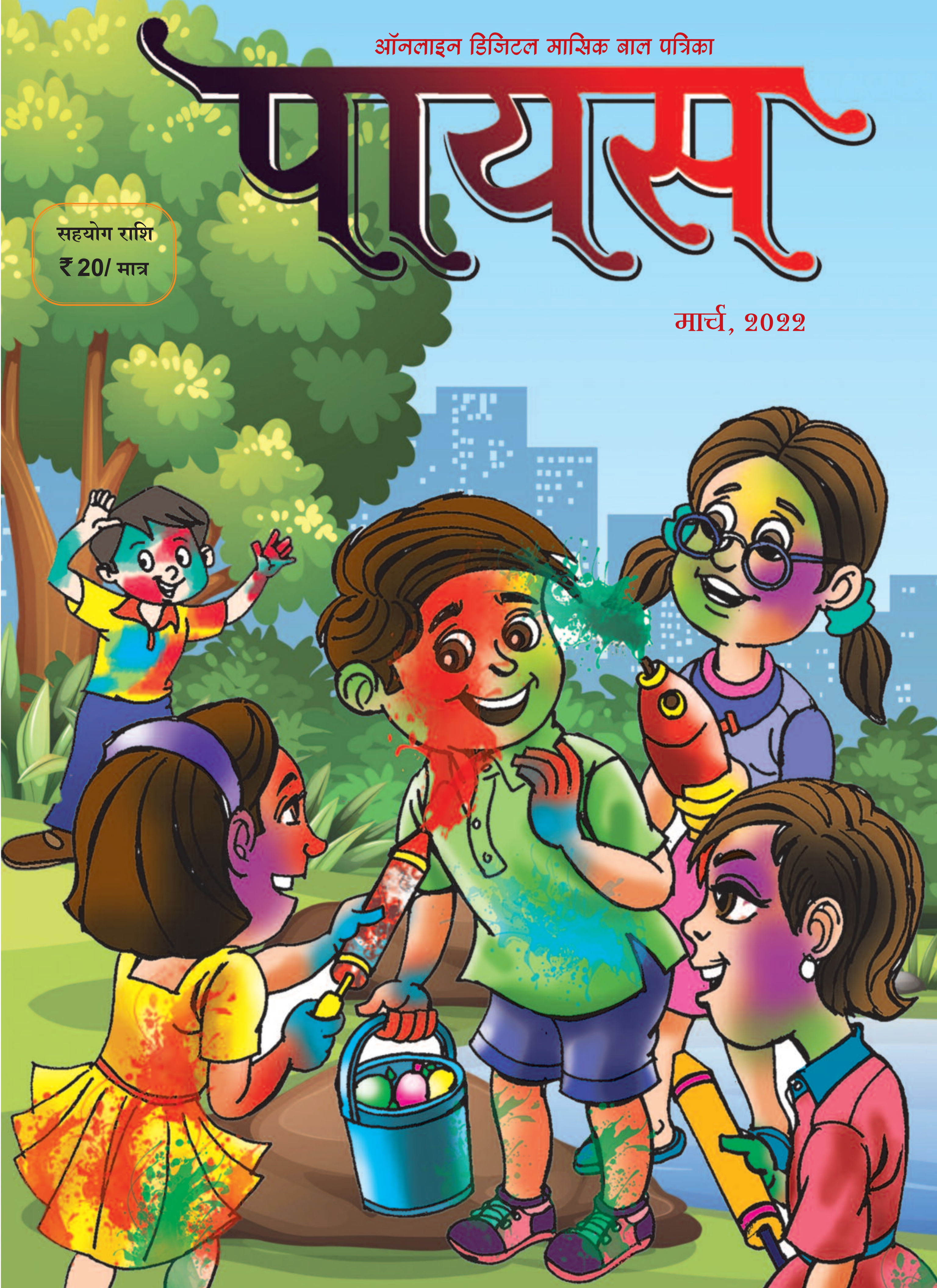

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

मार्च 2022

वर्ष : 2, अंक : 15

इस अंक की रचनाएं

मेन स्टोरी

मोनिका अग्रवाल : खुद ही बनाएं रंग 20

इस अंक में खास

बच्चों के प्रिय लेखक :
बाल साहित्य के प्रकाशपुंज हैं प्रकाश मनु 14
कार्टून :
सुखवंत कलसी : मूर्खिस्तान 17
पंकज राय : मजे होली के 21
विज्ञान :
डॉ. शील कौशिक : आर्यभट्ट 24
नयी सोच :
नए साल का नया कैलेंडर 26
बतकही :
राजेन्द्र श्रीवास्तव : बड़े काम की–दस बातें 27
देश–दुनिया :
क्या विश्व युद्ध होगा 28
श्रद्धांजलि :
अलविदा स्पिन के जादूगर 30
प्रकृति के सितारे :
घर की रानी गौरैया 32
धारावाहिक उपन्यास :
डॉ. विमला भंडारी : इल्ली और एनाफिलीज सिस्टर 38
`सैर–सपाटा :
सोने जैसा जैसलमेर 46
पुस्तक परिचय : 45

बाल मंच

चित्र : मोहम्मद आसिफ, आंचल, आदर्श मिश्रा, हुमैरा मिर्जा, सविता यादव, पिंकी साहू, 49–50
कविताएं : साक्षी कांडपाल : बच्चों का दिल मोहने आई,
राधा पोखरिया : जरा लफ्ज, जरा पैसे 51

कहानियां

अनिल जायसवाल : बिन नानी, कैसी होली 6
प्रकाश मनु : खुक्कन दादा की होली 10
आशा शर्मा : मीठी शरारत 18
मंजरी शुक्ला : इरादा बदल गया 23
डॉ. अशोक : अनोखा होली उत्सव 35
अरविंद कुमार 'साहू' : कुआं धकेल गांव 42

कविताएं

गिरीश पंकज : होली में ! 5
अखिलेश श्रीवास्तव चमन : जंगल में होली 9
डॉ. अनुपमा गुप्ता : एटम बम 29
शिवचरण चौहान : आई है गौरैया 31
डॉ. देशबन्धु शाहजहांपुरी : ठीक नहीं... 36
राजकुमार जैन राजन : बिन उनके खेलूँ क्या होली 37
श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल': रंग पर्व 40
दिशा ग्रोवर : खूब मनाएँ मिलकर होली 41

युद्ध समाधान नहीं

समय का पहिया बहुत तेजी से घूम रहा है। वर्ष 2022 आया और देखते-देखते इसके दो महीने बीत भी गए और तीसरा महीना भी शुरू हो गया। भारत का मौसम तो वैसे भी अपने आप में अनोखा होता है। कहां एक महीने पहले इतनी जबरदस्त ठंड और कहां अब गरमी डराने लगी है।

और दसवीं और बारहवीं के साथ-साथ छोटी क्लासेज के बच्चे तो और डरे हुए हैं। उनके ऑफलाइन एग्जाम होने वाले हैं या हो रहे हैं, जबकि पूरे साल उन्होंने पढ़ाई के नाम पर ऑनलाइन क्लासेज की हैं। पिछले दो साल से लिखने का अभ्यास छूटा हुआ है। पढ़ने का अभ्यास छूटा हुआ है। इसलिए इस परीक्षा का क्या परिणाम आएगा, यह कहना बड़ा मुश्किल है। बस हिम्मत बनाए रखो।

बच्चे ही नहीं, इस समय पूरी दुनिया बुरे दौर से गुजर रही है। लग रहा है, अब विश्व युद्ध हुआ कि तब विश्व युद्ध हुआ। महाशक्ति रूस अपने पड़ोसी देश यूक्रेन को दबाने में पूरी ताकत से लगा हुआ है। हजारों लोग जिनमें बच्चें भी हैं, मारे जा चुके हैं। कई शहर बर्बाद हो गए। ऐसा लग रहा है जैसे शेर और मेमने में युद्ध हो रहा हो। मेमना है यूक्रेन जो बार-बार अपने मित्र देशों से गुहार लगा रहा है कि मुझे बचाओ, मुझे बचाओ।

पर उसे युद्ध के लिए उकसाकर उसके सारे मित्र देश किनारे हो गए हैं। रूस ने युद्ध आरंभ किया था कि यूक्रेन नाटो का सदस्य न बने और यूक्रेन की जिद थी वह सदस्य बनेगा। अब इतनी जान-माल की हानि होने के बाद यूक्रेन के राष्ट्रपति कह रहे हैं कि वह नाटो की सदस्यता नहीं लेंगे क्योंकि नाटो देशों ने उन्हें धोखा दिया है। अगर यह फैसला वह पहले ले लेते, तो यह युद्ध ही नहीं होता और दुनिया तीसरे विश्व युद्ध के कगार पर खड़ी नहीं होती।

दरअसल डर तो यह है रूस से सीख लेकर कुछ और देश अपने पड़ोसी देशों से अपना बदला लेने पर न उतर आएं। बस प्रार्थना कीजिए कि ऐसा कुछ ना हो, क्योंकि इस 12-15 दिन के युद्ध ने महंगाई के विकराल मुख को खोल दिया है और आम आदमी का जीवन और नर्क होने वाला है। पता नहीं, लोग कब समझेंगे कि युद्ध किसी समस्या का समाधान नहीं है।

अगले महीने से तुम सब बच्चे नई कक्षाओं में और पहले की तरह स्कूल जाओगे। मेरी नजर में पिछले दो सालों की यह सबसे बड़ी और सबसे अच्छी घटना है।

उम्मीद है कि पिछले दो सालों में तुम लोगों ने जो खोया है, उसको बहुत तेजी से वापस प्राप्त करके अपने आप को सफलता की राह पर जरुर डाल दोगे।

होली नजदीक है और होली के रंगों में तुम्हें रंगने के लिए पायस के इस अंक में बहुत कुछ है। पढ़कर बताना अंक कैसा लगा।

अनिल जायसवाल

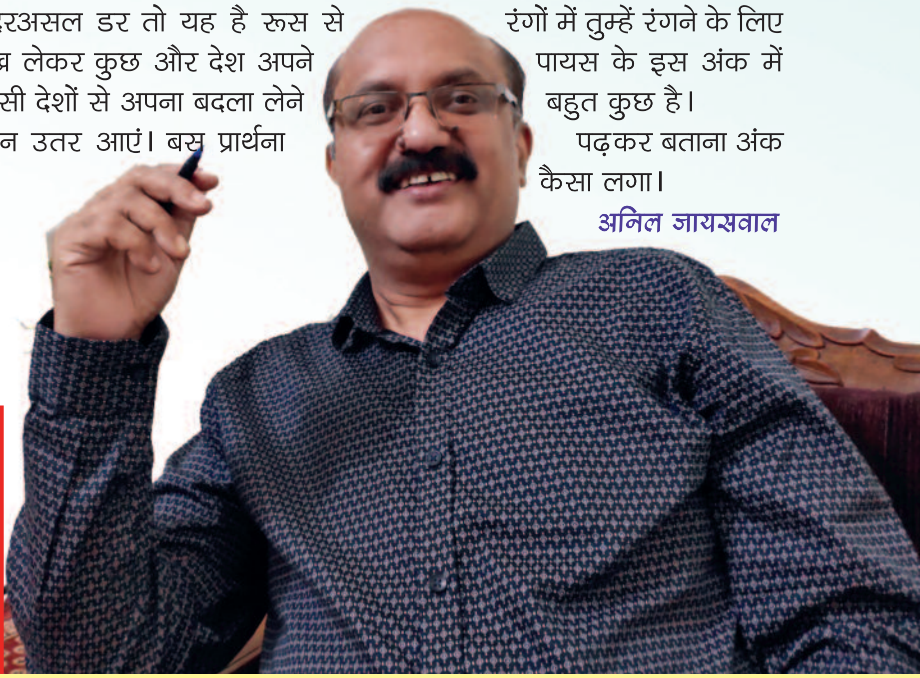

एक अपील

यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो कृपया पढ़ने के बाद इसका 20 रुपए शुल्क मानकर सहयोग करें। धन्यवाद

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका पायस

संपादक : अनिल जायसवाल
कविता सलाहकार : संतोष कुमार सिंह
कवर चित्र : भुपेन मंडल

Email : payasmagazine@gmail.com
Facebook : https://www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp : 7982014609
Youtube : payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog : https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

- लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।
- ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादकीय पता : PAYAS MAGAZINE
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh, New Delhi-110026

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। अब पायस का नया 12वां अंक आप सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. मोनिका अग्रवाल
2. रेनू मंडल
3. डॉ. अनीता भटनागर जैन

एक अपील

पत्रिका तैयार करने में धन की आवश्यकता होती है। तमाम खर्चों के बावजूद यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

भुगतान करना चाहें, तो

1 प्रति : 20 रुपए, एक वर्ष : 240 रुपए

एकमुश्त सहयोग : इच्छानुसार

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA

Anil Kumar Jaiswal

S/A no- 20155811729

Ifsc code SBIN0005943

Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533
ANIL JAISWAL

संपादक : अनिल जायसवाल

9810556533, 7982014609

email : **payasmagazine@gmail.com**

होली में !

आओ मिलकर
रंग उडाएँ होली में,
एक रंग में सब
रँग जाएँ होली में।

जाति-धर्म का भेद न पालें,
जो चाहे, उस पे रंग डालें।
होली कहती है हम सब से,
दुश्मन को भी गले लगा लें।
ऐसी कोई रीत चलाएँ होली में।
आओ मिलकर
रंग उड़ाएँ होली में।।

गंदी बातों को हम छोड़ें,
अच्छाई से नाता जोड़ें।
जो रास्ता सबसे अच्छा है ,
उस रस्ते पर हम पग मोड़ें।
बुरी आदतें चलो जलाएँ होली में।
आओ मिल कर
रंग उड़ाएँ होली में।।

रंग हमें लगते हैं अच्छे ,
इसीलिए खुश होते बच्चे।
रंगा सदा होते हैं पक्के,
रहें सदा हम सब भी सच्चे।
गीत यही अब मिलकर गाएँ होली में।।
आओ मिलकर
रंग उड़ाएँ होली में।

अपने लेखक को जानिए

गिरीश पंकज : गिरीश जी अनेक विधाओं में लिखते हैं। लगभग सौ पुस्तकें छप चुकी हैं। बच्चों के लिए नाटक, कहानी और कविताएं भी लिखते रहे हैं। उनके प्रकाशित बाल साहित्य की संख्या सात है।

बिन नानी, कैसी होली

अनिल जायसवाल

नन्ही सी नैना अपनी मम्मी के साथ अस्पताल के उस कमरे की ओर दौड़ी, जहां उर्मिला देवी एडमिट थीं। जाकर देखा, तो वह बिल्कुल बेजान सी पड़ी थीं।

हमेशा मुसकराते रहने वाली उर्मिला देवी यानी की नैना की नानी आज उसे देखकर भी चुप थीं। छठी कक्षा में पढ़ने वाली, नैना को याद है, वह जब भी नानी के घर जाती थी, उसे देखते ही नानी कहती थीं, "आ गई मेरी नैना, अब आएगा मेरे दिल को चैना।"

और नैना मुसकराते हुए नानी के गले लग जाती थी। आज भी नैना का मन हुआ कि नानी के गले लग जाए। परंतु उनकी हालत को देखकर उसकी आंखों में आंसू आ गए ।

नैना नोएडा के बड़ी सोसाईटी में रहती थी। उसकी नानी उनसे काफी दूर दिल्ली में एक छोटे से मकान में रहती थी। नैना के नाना जी की डेथ हो चुकी थी और नैना की मम्मी के अलावा अब नानी का कोई नहीं था। कई बार मम्मी ने नानी से अपने साथ रहने के लिए कहा। पर नानी मना कर देतीं।

और आज आज सुबह नानी के पड़ोसी का फोन आ गया था कि नानी को पैरालिसिस हुआ है।

अब तक पापा भी आ गए थे। नैना की मम्मी की आंखों में आंसू भरे हुए थे। नैना धीरे से बोली, "मम्मी चिंता मत करो। नानी को कुछ नहीं होगा।"

नानी एक हफ्ते अस्पताल में रहीं। वह धीरे-धीरे बोलतीं, पर उनका सीधा हाथ और पैर बिल्कुल भी काम नहीं करता। अस्पताल से छुट्टी हुई, तो पापा उन्हें अपने साथ घर ले गए। नानी को नैना के कमरे में शिफ्ट कर दिया गया।

शाम को पार्क में नैना और उसके दोस्तों की मुलाकात हुई, तो अमित ने पूछा, "नानी को क्या हुआ?"

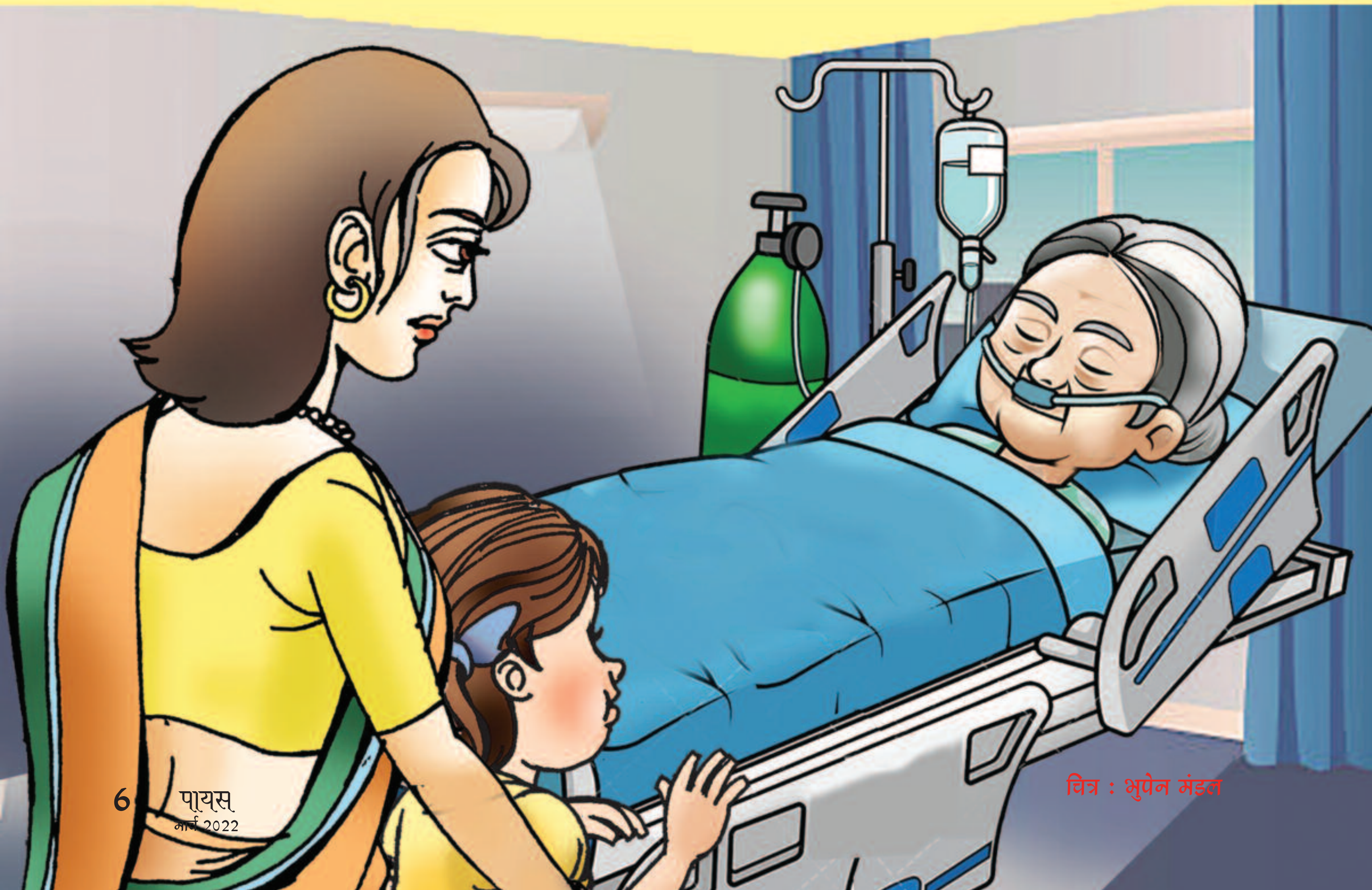

चित्र : भुपेन मंडल

"वह बीमार हो गई हैं।"

"नानी को ठीक करने के लिए हमें क्या करना होगा?" छोटा सा रॉनित बोला।

नैना ने कहा, "यह तो मुझे भी नहीं पता? चलो, नर्स आंटी से पता करते हैं।"

बच्चों की टोली नर्स आंटी के यहां पहुंच गई। सारी बात जानकर नर्स आंटी बोलीं, "बच्चो, फिजियोथैरेपिस्ट उनका इलाज करेगा ही। तुम लोग तो बस इतना कर सकते हो कि उन्हें कभी भी दुखी मत होने दो। उनके अंदर एनर्जी भरते रहो। पैरालिसिस में बस हिम्मत नहीं हारनी चाहिए।"

कई दिन गुजर गए। पर नानी पर एक्सरसाइज का ज्यादा असर नजर नहीं आता। एक शाम नैना ने सुना, पापा कह रहे थे, "मम्मी जी, बिल्कुल हिम्मत छोड़ बैठी हैं। ऐसे तो वह कभी ठीक न हो सकेंगी। और पैरालिसिस में छह महीने बाद ठीक होने की रफ्तार कम हो जाती है और फिर उनकी उम्र भी तो है।"

सुनकर नैना की मम्मी रोने लगीं। मम्मी को बांहों में भरकर नैना बोली, "मम्मी, आप चिंता न करो। नानी का ख्याल मैं रखूंगी। नानी पहले की तरह हमारे साथ चलेंगी, घूमेंगी-फिरेंगी। दो महीने बाद होली है। तब हम सब साथ में होली खेलेंगे।"

अगले दिन बच्चों की टोली मिली, तो नैना ने अपना फैसला सुना दिया, "दोस्तो, नानी हिम्मत हार रही हैं। मैंने कसम खाई है कि इस होली पर नानी उठकर हमारे साथ होली खेलेंगी, तो ही मैं होली खेलूंगी। नहीं तो नो नानी, नो होली, बिन नानी, कैसी होली।"

नैना की बात सुनकर एक मिनट के लिए वहां सन्नाटा छा गया। फिर अमित बोला, "हम सब के लिए भी नो नानी, नो होली।"

पास ही नर्स आंटी खड़ी थीं। बच्चों की भावना सुनकर वह बोलीं, "बच्चो, मैं तुम लोगों के साथ हूं। अब से नानी जी को एक्सरसाइज मैं कराऊंगी। बाकी, तुम लोग वैसा करोगे, जैसा मैं समझाऊंगी।"

नैना के मम्मी-पापा से मिलकर मैरी ने नानी की देखभाल का काम ले लिया। अगले दिन मैरी सुबह-सुबह नानी के पास जा पहुंचीं। नानी ने अनमनेपन से देखा कि फिर रोज की तरह एक्सरसाइज। पर मैरी बोलीं, "हम कोई एक्सरसाइज नहीं करेंगे। चलिए, बाहर घूमने चलते हैं।"

सुनकर नानी ने अचंभे से मैरी की तरफ देखा। मैरी के इशारे पर नैना व्हीलचेयर लेकर आ गई। दोनों ने मिलकर नानी को व्हीलचेयर पर बैठाया और फ्लैट से बाहर आ गए।

नानी को इतने दिनों बाद बाहर आकर बड़ा अच्छा लग रहा था। नैना की नानी को देखकर उसके सारे दोस्त भी फटाफट इकट्ठे हो गए। उन्हें देखकर नानी के चेहरे पर हलकी सी मुसकराहट आ गई।

अमित बोला, "आप जल्दी से ठीक हो जाओ नानी। हम लोग होली पर आपके साथ होली खेलना चाहते हैं।"

दुखी होकर नानी बोलीं, "अब मैं ठीक नहीं हो पाऊंगी।"

नानी का हाथ पकड़कर नैना धीरे से बोली, "नानी, क्या आपका मन नहीं करता फिर से हमारे साथ खेलने का, बातें करने का?"

नानी की आंखों में आंसू आ गए। वह बोलीं, "हां बेटा, मेरा भी दिल करता है, तुम लोग साथ घूमने का। पर अब ऐसा नहीं हो पाएगा।"

मैरी ने नानी के कंधा थपथपाते हुए कहा, "नानी जी, देखना एक महीने में आप हमारी तरह चल-फिर कर यहां तक आएंगी। बस, जो मैं कहती हूं, वैसा कीजिए और बच्चों के साथ खुश रहिए।"

नानी ने धीमे से सिर हिला दिया। व्हील चेयर पर नानी को पूरी सोसाइटी का दो चक्कर लगाया गया। फिर मैरी बोलीं, "अब चलकर थोड़ी देर एक्सरसाइज भी कर लें?"

खुश होकर नानी बोलीं, 'हां, चलो।"

बड़े दिनों बाद सबने नानी को मुसकराते हुए देखा था। अब तो यह रोज का काम हो गया। मैरी पहले नानी को सुबह-शाम सैर करवातीं, फिर एक्सरसाइज।

नानी के पास बैठकर नैना उन्हें कहानी की किताबों से नई-नई कहानियां सुनाती, तो कभी बाकी बच्चे आकर नानी के सामने ठुमके लगाते और उनसे कहानी सुनने की फरमाइश करते। नानी उनकी बात टाल नहीं पातीं। कहानी के बाद जाते-जाते सारे बच्चे, नानी को पप्पी देते हुए जाते।

बच्चों का प्यार देखकर नानी मन ही मन सोचतीं, 'हां मैं ठीक होकर रहूंगी। मुझे बच्चों के साथ घूमना-फिरना है।'

नैना ने अपने कमरे का हुलिया भी बदल दिया था। नानी की पसंद के पर्दे, नानी के लिए आरामकुर्सी। वह नानी के पास ही सो जाती ताकि उनका ध्यान रखने में आसानी होगी।

एक दिन बच्चे नानी के पास जमा थे। अमित ने पूछा, "नानी आपके समय में मम्मी-डैडी अपने बच्चों को कैसे सजा देते थे?"

नानी मुसकराकर बोलीं, "हमें कान खींचकर सजा दी जाती थी, चाहे घर हो या स्कूल।"

"कैसे कान खींचते थे?" एक बच्चे ने पूछा।

"ऐसे।" कहकर नानी ने हाथ बढ़ाने की कोशिश की। अब नानी के दाएं हाथ की उंगलियां थोड़ी सी हिलीं। नैना ने देखा, तो खुशी से चिल्लाई, "मम्मी-मम्मी। नानी की उंगलियां हिल रही है।"

आवाज सुनकर नैना की मम्मी दौड़ी-दौड़ी आईं। नानी भी हैरानी से अपनी उंगलियों को देख रही थीं जो थोड़ी-थोड़ी हिल रही थीं। इतने दिनों बाद हाथ में हरकत आने पर नानी के चेहरे पर मुसकान खिल गई। बच्चों और मैरी की मेहनत रंग ला रही थी।

होली में 15 दिन रह गए थे। अब नानी वॉकर के सहारे धीरे-धीरे चलने लगी थीं। मेरी उन्हें सहारा देकर चलाने की कोशिश करती। नानी के हाथ में भी कुछ जान आने लगी थी। नानी में आए सुधार को देखकर सब बहुत खुश थे।

आखिर होली का दिन आ गया। सब अपने-अपने तरीके से तैयारी कर कहे थे। पर सबके मन में एक ही सवाल था, क्या नानी उठकर होली खेल पाएंगी? क्या बच्चों की विश पूरी होगी?

नैना की मम्मी ने बड़े प्यार से नानी को नई साड़ी पहनाकर तैयार किया और उन्हें व्हील चेयर पर बैठा दिया। आज नानी का चेहरा खुशी से दमक रहा था। मैरी के साथ नैना उन्हें लेकर सोसाईटी के पार्क में पहुंची। वहां होली मिलन समारोह होने वाला था। सारे बच्चे खुशी से चिल्लाते हुए नानी के पास इकट्ठे हो गए और बोले, "आप हमारे साथ होली खेलोगी न नानी?"

"नहीं बच्चो, मैं खड़ी नहीं हो पाऊंगी।" नानी ने दुखी होकर कहा।

"तो ठीक है नानी, तो हम भी इस बार होली नहीं खेलेंगे।" सारे बच्चे रूठ गए

नैना के पापा ने बच्चों से कहा, "इन्हें तंग मत करो। यह उठने लायक नहीं हैं।" सोसाईटी के और लोग भी उनका समर्थन करने लगे और बच्चों को समझाने लगे।

बच्चों का चेहरा उतर गया। नैना ने गुलाल की थाली से थोड़ा से गुलाल लिया और नानी के माथे पर लगाकर उनके पैर छू लिए और बोली, "ओ के नानी, हम सब आपसे जबरदस्ती नहीं करेंगे। हैप्पी नानी, हैप्पी होली।"

नानी ने सबकी तरफ देखा। जहां सारे बड़े लोग बच्चों को समझाने में लगे थे, वहीं बच्चों के चेहरे उतर गए थे। नानी ने कुछ पल सोचा और फिर मेरी को कुछ बोला। मैरी वॉकर लेने जाने लगी, तो नानी ने उसे रोक दिया और उसका कंधा पकड़कर धीरे-धीरे खड़ी होने लगीं।

देखकर नैना के पापा का मुंह खुला का खुला रह गया। नानी मुसकराते हुए धीरे-धीरे खड़ी हो गई और बोलीं, "इन बच्चों ने मेरे साथ होली खेलने के लिए इतनी मेहनत की। मुझे नया जीवन दिया। मैं भला इनके साथ होली खेलने का मौका कैसे छोड़ सकती हूं?"

नानी ने नैना के हाथ से थाली लेकर गुलाल नैना के चेहरे पर मलते हुए प्यार से बोलीं, "ओ मेरी नैना, तुझे देखा तो मेरे दिल को आ गया चैना।"

नैना प्यार से नानी के गले लग गई। सारे बच्चे खुशी से चिल्लाए, "अब नो नानी-नो होली नहीं, अब तो विद नानी जम के होली।"

सबके चेहरे अब खुशी से दमक रहे थे। होली का त्योहार उनके जीवन में खुशियां ले आया था। ❀

जंगल में होली

जंगल में होली हुयी
उड़ा अबीर, गुलाल।
लगी नाचने लोमड़ी
भालू देता ताल।

गीदड़ जोकर बन गया
पहन फटे परिधान।
मीठी राग अलापती
कोयल खींचे तान।

बिल्ली मौसी आ गयी
कर के खूब श्रृंगार।

हाथी करता सूंढ़ से
रंगों की बौछार।

मुर्गा, कौवा गा रहे
कुकड़ूं, कुकड़ूं, काँव।
बाँध लिया था मोर ने
घुंघरू अपने पाँव।

उछल, कूदकर बंदर ने
मचा दिया हुड़दंग
गदहा रेंका जोर से
हुआ रंग में भंग।

अपने लेखक को जानिए

अखिलेश श्रीवास्तव चमन : बाल उपन्यास, बाल कहानी संकलन, बाल कविता संकलन, एक बाल एकांकी संकलन, समीक्षात्मक लेखों तथा यात्रा संस्मरण की कुल 29 पुस्तकें प्रकाशित। भारतेन्दु हरिश्चंद्र पुरस्कार सहित दो दर्जन पुरस्कारों से सम्मानित।

चित्र : भुपेन मंडल

खुक्कन दादा की होली

खुक्कन दादा तो बस खुक्कन दादा ही थे। घोर पढ़ाकू और अपने आप में खोए-खोए से। यों व्यक्तित्व भी कुछ अलग ही था उनका। लंबा कद, गोरा गेहुआं रंग। खूब ढीला-ढाला सा कुरता-पाजामा और सिर के लंबे घुंघराले बाल माथे पर झूलते हुए। आंखों पर खूब बड़ा सा मोटे कांच का चश्मा लगाए वे दिन-रात बस किताबों में ही खोए रहते थे।

मोहल्ले की बच्चा पार्टी ने देखा, तो सबको अजीब लगा। अरे भई, यह क्या ? दिन-रात किताबें, किताबें और किताबें। किताबों के अलावा भी कोई दुनिया है कि नहीं!

सो पूरी की पूरी बच्चा पार्टी ने फैसला किया कि खुक्कन दादा को जरा खिजाया जाए। आखिर उन्हें पता तो चले कि लच्छूपुरा मोहल्ले की बच्चा पार्टी में कितना दम है।

"क्यों ठीक है न?" छुटकी ने खिलर-खिलर हंसते हुए कहा।

इस पर सबने खूब उछल-उछलकर हवा में कलामुंडियां खाते हुए हामी भरी, "हां जी हां, हां जी हां, हां-हां-हां...!"

बस, फिर क्या था! लच्छूपुरा की गली नंबर तीन में किराए का कमरा लेकर दिन-रात किताबें घोंटने वाले खुक्कन दादा को घेरने-घारने का प्रोग्राम चालू हो गया। दो ऊधमी बच्चों ने खिड़की में गरदन घुसाकर झांका, और मजे में बंदर की तरह मुंह बनाकर खी-खी-खी शुरू कर दी। बाकी बच्चों ने उसी समय दरवाजे के पीछे उछल-कूद करते हुए ही-ही-हो-हो-हो का संगीत छेड़ा, तो खुक्कन दादा की पेशानियों पर बल पड़ गए।

‘उफ, कहां से आ गई यह बला?’ उन्होंने बिटर-बिटर आंखों से इधर-उधर देखा। फिर एकाएक चारपाई से कूदे और नीचे फर्श पर आ खड़े हुए। उसी पल वे फुरती से कमरे से बाहर निकले। मगर तब तक तो पूरी की पूरी बच्चा पार्टी रफूचक्कर हो चुकी थी।

मगर हां, भागते हुए भूतों में से एक की शक्ल तो उन्होंने देख ही ली थी। और देखकर खुक्कन दादा को इतना मजा आया, इतना मजा कि जवाब में जोर से ही-ही-खी-खी-खी किए बिना उनसे रहा ही नहीं गया।

सामने गुलमोहर के एक बड़े से पेड़ की आड़ में खड़े बच्चों ने यह देखा तो सारे के सारे चकराए, ‘अरे भई, ये खुक्कन दादा तो हंसते भी हैं...!’

बात खुक्कन दादा के कानों में गई तो वहीं से छतफाड़ ठहाका लगाकर बोले, “अरे बुद्धू मियां, हंसता ही नहीं हूं, कहानियां भी सुनाता हूं। आ जाओ सुननी हैं तो, एक से एक बढ़िया, मजेदार कहानियां!”

बच्चे थोड़े पसोपेश में थे। कहीं यह खुक्कन दादा की कोई चाल तो नहीं उन्हें फंसाने की? मगर खुक्कन दादा तो बिल्कुल बच्चों की तरह मगन होकर हंस रहे थे। बस, हंसते ही जा रहे थे। देखकर उनका डर खत्म हो गया।

“अरे भई, कहानियां सुननी हैं तो आ जाओ जल्दी से। कहीं छुपने-छुपाने की जरूरत नहीं है।” खुक्कन दादा ने एक बार फिर ऊंची पुकार लगाई।

“ऐं, ऐसा...?” अब तो सारे बच्चों की आंखें झपक-झपक।

उन्हें यह तो लगता था कि खुक्कन दादा इतना पढ़ते हैं, तो कुछ कहानियां भी जरूर उन्हें याद होंगी। पर वे कहानियों के ऐसे रसिया हैं, भला यह वे कैसे जान सकते थे?

फिर तो खुक्कन दादा के कमरे में हर शाम कहानियों की ऐसा बढ़िया क्लास लगने लगी कि शाम होते-होते बच्चे दौड़कर वहां पहुंच जाते। खुक्कन दादा अपनी किताबें परे सरकाते, फिर कुरते की जेब हिलाकर उसमें से ऐसी बढ़िया कहानी निकालकर सुनाते कि पूरी बच्चा पाटी बल्ले-बल्ले।

छुटकी, देबू, संजू, दीपू, गोपू, गुल्लू, दिलबाग, टिनी, टुलटुल सबके सब खुक्कन दादा की कहानियों के इस कदर मुरीद बन गए थे कि दादा से कहानियां सुनते ही वे उन्हें झटपट याद हो जातीं। फिर वे अपने मोहल्ले में सबको बारी-बारी से ये कहानियां सुनाया करते थे।

दिन इसी तरह खिसकते हुए आगे बढ़े, तो होली भी नजदीक आ गई। तब खुक्कन दादा ने एकाएक अपना फैसला सुना दिया, “हम होली कुछ नए ढंग से मनाएंगे!”

और हुआ भी ऐसा ही। बड़ी सुबह से ही होली की चहल-पहल शुरू हो गई। खुक्कन दादा ने ढेरों गुलाल और टेसू के रंग का इंतजाम किया था। गुझिए और मिठाइयां बच्चे अपने-अपने घरों से बनवाकर लाए थे। साथ ही गले में एक बड़ा-सा ढोल लटकाए ढोली भी था, जिसने सिर पर रंग-बिरंगा साफा बांध रखा था। जब वह मस्ती से भरकर ढोलक पर थाप देता, तो चारों ओर होली का संगीत बिखर जाता। दूर तक हवाएं भी जैसे ढम्मक-ढम, ढम्मक-ढम के ताल पर नाचने लगतीं। ओह, क्या मस्ती थी, क्या आनंद!

फिर आज की एक खास बात यह थी कि बच्चा पार्टी में बड़े भी शामिल थे। टिनी और टुलटुल के साथ उनकी मम्मी और पापा भी आए थे। छुटकी के साथ उसकी बड़की दीदी भी थी। दिलबाग का बड़ा भाई सुरजीत भी था, जो अपने साथ अपने प्यारे दोस्त अशरफ को भी ले आया था। सभी के तन-मन होली के रंगों में सराबोर थे।

सुबह से ही होली का आनंद-मेला शुरू हुआ, तो इतने रंग छलके, मानो आसमान से रंगों की बरसात हो रही है। हर कोई होली के रंगों में नहाकर मजे से गा रहा था, “होली भई होली है, रंग-बिरंगी होली है! बड़े मजे की होली है!...”

होली के रंग फागुन के रंग थे, प्यार के रंग...! जीवन और मस्ती के रंग।

दोपहर होते-होते रंगों की यह वर्षा थमी तो खूब गुझिए और मिठाइयां

अपने लेखक को जानिए

प्रकाश मनु : सुप्रसिद्ध साहित्यकार, संपादक और बच्चों के प्रिय लेखक। लगभग ढाई दशकों तक बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका ‘नंदन’ के संपादन से जुड़े रहे। बाल साहित्य की सौ से अधिक पुस्तकें। बाल कविता का इतिहास भी लिखा। प्रसिद्ध साहित्यकारों के संस्मरण, आत्मकथा तथा बाल साहित्य से जुड़ी कुछ बड़ी योजनाओं पर काम कर रहे हैं।

खाई गईं। बच्चों ने एक से एक प्यारे गाने सुनाए।

तभी छुटकी ने याद दिलाया, "खुक्कन दादा, आज आपकी कहानी तो सुनाई ही नहीं...!"

"अरे, कहानी...! आज भी कहानी?" कहते-कहते खुक्कन दादा हंसे। फिर बोले, "अच्छा तो सुनो। आज बिल्कुल सच्ची कहानी सुनाता हूं...!"

कहते-कहते खुक्कन दादा पूरे रंग में आ गए, और चल पड़ा किस्से का तार...

ओह, वह होली भी क्या होली थी! मैं खुद छोटा सा था, कोई दस-बारह बरस का।...उस साल होली पर मौसम बड़ा खुशनुमा हो गया था। और तबीयत होती थी कि भीगें, भीगें, खूब भीगें! होली को बस दो ही दिन बचे थे, पर मेरा मन तो अभी से बेकाबू हो रहा था। सोच रहा था, वाह, होली पर सब दोस्तों को रंगों से नहलाऊंगा। फिर खूब जी भरकर झूमेंगे, नाचेंगे-गाएंगे। अहा, कितना मजा आएगा!

छोटे भाई भुल्लन के साथ मिलकर मैंने जमकर होली का प्रोग्राम बनाया था कि कैसे दोस्तों को रंगों में लहालोट किया जाएगा। होली पर पहनने और दोस्तों को पहनाने के लिए जो टोपियां तैयार की गईं, उन पर बीचों-बीच जोरों से हंसता-खिलखिलाता टोपीधारी विराजमान था, जो मजे में 'चीपों-चीपों' कर रहा था। नीचे बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था 'होली है जी, होली है, बड़े मजे की होली है...अजी गधे जी, होली है!'

होली वाले दिन मैंने सुबह से ही रंगों की कई बालटियां तैयार करके रख ली थीं। सोच रहा था, जैसे ही दोस्त आएंगे, एक के बाद एक सारी बालटियां उनके सिर पर उड़ेल दूंगा। उधर भुल्लन ने नाद में पानी भरकर खूब गहरा-गहरा गुलाबी रंग घोल दिया था और हम पक्के शिकारियों की तरह ओट में छिपकर बैठ गए थे।

पर दोस्तों का तो कुछ अता-पता ही नहीं था। सो कुछ-कुछ झुंझलाहट भी हो रही थी। आखिर बड़ी देर बाद पड़ोस का नीटू आया। जैसे ही वह गेट के के पास आया, भुल्लन ने फुर्ती से छत पर जाकर

रंग की पूरी बालटी उस पर उड़ेल दी। मगर नीटू चौकन्ना था। वह उछलकर एक ओर कूदा तो बच गया, और पूरा का पूरा रंग पड़ा शेरू पर।

शेरू सफेद रंग का मेरा प्यारा कुत्ता था, पर रंग की बालटी पड़ने से अब वह एकदम लाल-गुलाल हो गया था।

बेचारे शेरू को यह गुलगुपाड़ा कुछ समझ में नहीं आया सो गुस्से में उसने खूब जोर से भौंकना शुरू कर दिया। पर फिर मुझे और नीटू को तालियां बजा-बजाकर हंसते-कूदते देखा, तो उसका सारा गुस्सा काफूर हो गया। फिर तो वह भी मौज में आकर हमारे साथ खूब उछल-कूद करने लगा।

इतने में मेरे और दोस्त भी आ गए। शेरू को देख, सब हंसकर बोले, "वाह खुक्कन, क्या हम नहीं थे तो शेरू के साथ ही होली खेलने लग गए?"

इस पर मैंने जरा गरदन अकड़ाकर कहा, "और क्या, मेरा शेरू तो निराला है, एकदम निराला! रंगों से बिल्कुल नहीं डरता।"

"मगर खुक्कन, तुम जरा बाहर तो निकलो...!" कहते हुए दोस्तों ने मुझे पकड़ा। बात की बात में सबकी पिचकारियों से रंग उड़ने लगे। खूब मस्ती और रंग। रंग और मस्ती। शेरू पर भी रंगों की धार पड़ी। मगर अब वह वाकई खुश था। सुबह वह लाल-गुलाबी लग रहा था तो अब लाल-पीला, हरा-गुलाबी...! जाने कितने ही रंग मिल जाने से अब वह पूरी तरह मल्टीकलर हो गया था।

उधर बालटियों में रंग खत्म हुए, तो भुल्लन की नाद वाली योजना खूब काम आई। मेरे और भुल्लन समेत सभी दोस्तों ने रंगों की नाद में दो-एक डुबकियां तो जरूर ही खाईं और खूब हो-हो करके हंसे। खुद भुल्लन इस कदर रंगों से सराबोर था कि पहचाना ही नहीं जा रहा था। बस, हंसता तो उसके उजले-उजले दांत चमककर बताते कि हां, भई यह भुल्लन ही है!

बाद में दोस्तों ने होली की खुशियों में गुझिया खाए और गाने गाए, तो शेरू ने भी उछल-कूदकर साथ निभाया। उसे भी खूब गुझिया खाने को मिलीं। जब दोस्त चलने लगे, तो

उन्होंने कहा, "यार खुक्कन, यह होली तो शेरू की होली की वजह से हमारी यादगार होली बन गई।"

हम सबके साथ-साथ शेरू भी हंस रहा था और मजे में पूंछ हिला रहा था।

आहा, क्या मजे की होली थी वह, जिसकी मीठी याद अब भी मेरे मन में बसी हुई है...!

खुक्कन दादा की कहानी खत्म होते ही खूब जोरदार तालियां। फिर बच्चे एकाएक उठ खड़े हुए। और खुक्कन दादा कुछ समझ पाते, इससे पहले ही होली के रंगों और सुरों से भीगा हुआ उनका नाच-गाना शुरू हो गया था।

नाच के साथ-साथ ये गाने के बोल भी हवा में उड़ रहे थे-

होली है, हां जी, होली है...!
खुशियों का एक टोला है,
खुशियों की ही टोली है।
पास हमारे प्यारा सा
कितना अच्छा ढोली है,
हमने हंसी-खुशी की भाई
लो, हर खिड़की खोली है...!
लेकिन यही तो होली है,
होली है, भई होली है!!...

बड़ी देर तक नाचते-नाचते बच्चे थमे, तो उनके चेहरे पर सच्ची खुशियों के रंग थे।

टिनी और टुलटुल के पापा अपनी तलवार कट मूंछों में जोर-जोर से हंस रहे थे। साथ ही लच्छूपुरा मोहल्ले की इस हंसती-खिलखिलाती अलमस्त टोली की तस्वीरें भी अपने कैमरे में कैद करते जा रहे थे।

खुक्कन दादा ने होली के हुलियारों की उस अनोखी रंग-बिरंगी टोली को साथ लिया, फिर पूरे शहर का चक्कर काटने निकल पड़े। आगे-आगे धम-धमाधम ढोल बजाता हुआ ढोली जा रहा था। पीछे-पीछे 'होली है, भई होली है' गाते और बीच-बीच में नाच-नाचकर खुशी प्रकट करते बच्चे जा रहे थे। और सबसे अंत में खुक्कन दादा, जो कभी हंसते तो कभी बच्चों के साथ-साथ ऊंचे स्वर में गा उठते थे-

होली है, भई होली है!
साथ हमारे खुशियों की
एक रंग-बिरंगी टोली है,
होली है, भई होली है...
जिसने सबके दिल में भाई
ऐसी मस्ती घोली है,
होली है, हां, होली है...!

और खुक्कन दादा ही नहीं, पूरी बच्चा पार्टी को भी लग रहा था कि खुक्कन दादा के किस्से-कहानियों का असली रंग तो आज निकलकर आया है, जो अपनी मीठी फुहारों से शहर की हर गली, सड़क, बल्कि चप्पे-चप्पे को भिगो रहा था।

बच्चों के प्रिय लेखक

बाल साहित्य के प्रकाश पुंज हैं

प्रकाश मनु

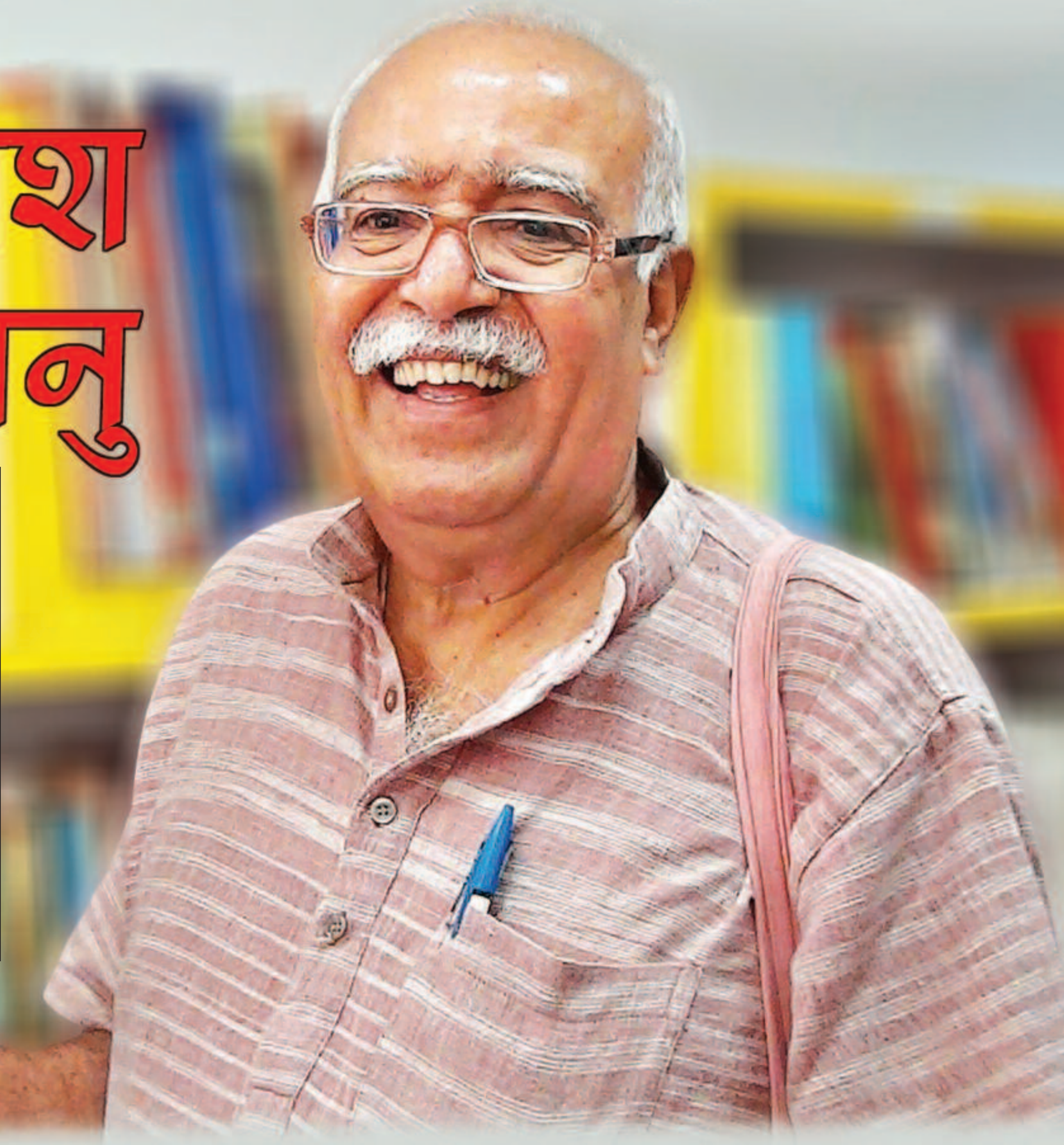

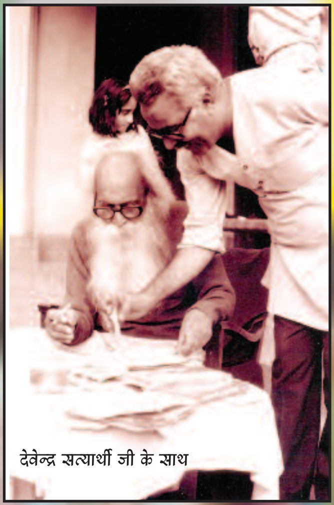

देवेन्द्र सत्यार्थी जी के साथ

कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जिनके जिक्र मात्र से मन आदर से भर जाता है। कुछ ऐसे ही बात होती है जब हम प्रकाश मनु के बारे में बात करते हैं। बाल कविता व कहानी के क्षेत्र में बड़ा नाम, प्रकाश मनु का जीवन भी कम कहानियत लिए हुए नहीं है।

12 मई, 1950 को उत्तर प्रदेश के शिकोहाबाद शहर में एक मध्यवर्गीय परिवार में प्रकाश मनु का जन्म हुआ। हालांकि उनकी कहानी इससे कुछ पहले खुशाब जिले के कुरड़-कट्टा गांव से, जो अब पाकिस्तान में है, से शुरू होती है। देश-विभाजन के बाद इस सुंदर गांव से विस्थापित होकर, कई मुश्किलों से गुजरता हुआ, उनका परिवार शिकोहाबाद पहुंचा और फिर यहीं बस गया। यहीं आजादी के कोई तीन साल बाद प्रकाश मनु का जन्म हुआ।

नौ भाई-बहनों में वह आठवें नंबर के थे। तीनेक साल बड़े श्याम भैया का व्यक्तित्व से वह ज्यादा प्रभावित रहे। प्रकाश मनु के पिता का नाम है, चाननदास और मां का नाम है भाग्सुधी। मां एक बड़े जमींदार परिवार की थीं। उनके नाना जी जाने-माने हकीम थे और दूर-दूर तक उनका नाम था। पिता का अपना व्यवसाय था। पहले कपड़े का, फिर अनाज और तेल का व्यवसाय

करने लगे। पिता ने शुरू में ही अपनी ईमानदारी से साख बना ली थी, जो अंत तक कायम रही।

प्रकाश मनु बचपन में बहुत दुबले-पतले और कमजोर थे। बस, एक कबड्डी कुछ ठीक-ठाक खेल लेते थे। बहुत छोटे थे, तभी से चुपचाप बैठे कुछ न कुछ सोचते रहते थे। शायद उनके लेखक होने की कहानी भी यहीं से निकलती है।

प्रकाश मनु जब कोई पांच-छह बरस के थे, तब छत से गिर पड़े थे। डाक्टर ने जांच करने के बाद कहा, "कोई गुम चोट हो सकती है। इसलिए इसे अभी दस-पंद्रह दिन बेड रेस्ट करवाइए।"

अब वह दिन भर चारपाई पर पड़े रहते। अनार, अंगूर, आलूबुखारा जैसे खूब बढ़िया फल खाने को मिलते। मां और नानी कहानियां सुनातीं जो उन्हें बहुत पसंद आतीं। हर कहानी में एक नया संसार था, नया रोमांच। सुनते हुए कल्पना और अनुभवों की नई-नई खिड़कियां खुलने लगतीं।

जब स्कूल गए, तो स्कूली पढ़ाई का असर यह हुआ कि वर्णमाला सीखने के बाद जब पता चला कि क, ल और म मिलाकर कलम बन जाती है, तो उनके आनंद का कोई ठिकाना न रहा। फिर जल्दी ही कहानियां पढ़ने का उन्हें चस्का लगा। 'चंदा मामा' पत्रिका की उन दिनों धूम थी। कभी-कभी उसमें पूरा एक उपन्यास छपता, तब तो उनके मजे ही आ जाते।

छठी कक्षा में श्याम भैया ने उन्हें प्रेमचंद की कहानियों की पुस्तक लाकर दी। उसमें

सचमुच एक से एक नायाब कहानियां थीं। जब 'बड़े भाईसाहब' कहानी पढ़ी, तो वह एकदम हक्का-बक्का रह गए। उन्हें लगा, अरे, यह तो उनके श्याम भैया की ही कहानी है। भला यह प्रेमचंद को कैसे पता चल गई? तब उनकी समझ में आया कि यही तो कहानी का जादू है। इसी के चलते एक की कहानी सबकी कहानी हो जाती है।

उनके बड़े भाई जगन साहब के घरेलू पुस्तकालय में ढेरों पुस्तकें थीं। उनके लिए वे दुर्लभ खजाना बन गईं। किताब क्या होती है और किताब पढ़ने का सुख क्या होता है, यह उन्होंने जान लिया था।

शुरू से ही प्रकाश मनु विज्ञान के विद्यार्थी रहे। उन दिनों पूरे देश में 'अंग्रेजी हटाओ' आंदोलन चला, तो उन्होंने भी कुछ मित्रों के साथ रात-रात भर सड़कों पर खड़िया और चूने से नारे लिखे। पोस्टर चिपकाए।

ये वे दिन थे, जब वह विवेकानंद को बहुत पढ़ते थे। इसका उनके मन पर बहुत गहरा असर पड़ा। तो एक दिन वह भी अपने ढंग का जीवन जीने के लिए घर छोड़कर निकल पड़े। भिक्षा मांगकर खाना खाया। फिर एक दिन पेड़ के नीचे बैठा सुस्ता रहे थे, तो अचानक मां की गीली आंखें दिखाई दीं। लगा, मां उन्हें पुकार रही हैं। उसी दिन वह घर लौट आए।

यों विज्ञान की सीढ़ियां चढ़ते-चढ़ते सन 1973 में उन्होंने आगरा कॉलेज, आगरा से भौतिक विज्ञान में एम.एस-सी. की। पर यहां तक आते-आते उन्हें लगने लगा कि उनका मन तो साहित्य में ही रमता है। तो उन्होंने घर पर घोषणा कर दी कि अब वह हिंदी साहित्य में एम.ए. करके पी-एच.डी. करेंगे और अपना जीवन साहित्य को ही समर्पित करेंगे

इसके बाद प्रकाश मनु के जीवन का पूरा ताना-बाना ही बदल गया। जैसे उनका एक नया जन्म हुआ हो। 1975 में उन्होंने हिंदी साहित्य में एम.ए. किया। 1980 में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से 'छायावाद एवं परवर्ती काव्य में सौंदर्यानुभूति' पर उनका शोध पूरा हुआ।

कुरुक्षेत्र में आकर ही वह चंद्रप्रकाश से प्रकाश मनु हुए। असल में उनके नाम की भी एक विचित्र कहानी है। मां ने उनका नाम रखा, शिवचंद्र प्रकाश। जब उनके बड़े

युवा प्रकाश मनु पत्नी के साथ

पत्नी और बड़ी बेटी के साथ

पत्नी और छोटी बेटी के साथ

मित्र देवेंद्र कुमार और रमेश तैलंग के साथ

फुरसत के क्षण

पारिवारिक उमंग के पल

तत्कालीन मुख्यमंत्री (उ.प्र) से पुरस्कार

भाईसाहब स्कूल में नाम लिखवाने गए, तो हेडमास्टर तिवारी साहब ने कहा, "अरे, इतना लंबा नाम ?" उन्होंने नाम के आगे से शिव हटाकर स्कूल में नाम लिखा, चंद्रप्रकाश।

लिखने-पढ़ने की शुरुआत हुई, तो उन्होंने अपना नाम बदला। 1975 में कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आने पर उनका व्यक्तित्व काफी बदला। अब वह प्रकाश मनु के नाम से लिखने लगे। अब इसी नाम से वह साहित्य जगत में प्रसद्धि हैं।

कुरुक्षेत्र में ही उनका डॉ. सुनीता से विवाह हुआ। सुनीता और वह साथ-साथ शोध कर रहे थे। तभी उन्होंने तय किया कि उन्हें साथ-साथ जीवन बिताना चाहिए। बहुत सादा सा यह विवाह था, जिसमें कुल पंद्रह-बीस लोग शामिल थे।

हालांकि विवाह के साथ ही काफी मुश्किलें भी शुरू हो गईं। कुछ समय बेरोजगार भी रहे। फिर हरियाणा और पंजाब के कॉलेजों में कुछ बरसों तक प्राध्यापक रहे। फिर पंजाब छोड़कर दिल्ली आना हुआ। यहां वह पत्रकारिता से जुड़े।

पत्रकारिता का एक बड़ा ऊंचा आदर्श उनके मन में था। उन्हें लगता था कि पत्रकारिता में आकर दुनिया को बदला जा सकता है। यों कोई ढाई-तीन बरस उन्होंने दिल्ली प्रेस की पत्रिकाओं में संपादन किया। फिर हिंदुस्तान टाइम्स की लोकप्रिय बाल पत्रिका 'नंदन' के संपादकीय विभाग में आ गए। लगभग चौबीस सालों तक वह 'नंदन' के संपादन से जुड़े रहे। इस दौरान बच्चों के लिए ढेरों कविता, कहानी, लेख लिखे।

बच्चों के लिए लिखने में उनका खूब मन लगता है। एक बार उन्होंने कहा भी, "बच्चों के लिए लिखते समय मुझे लगता है, जैसे मेरा मन और आत्मा कुछ और निर्मल हो गई है।"

इसी तरह वर्षों की मेहनत से लिखी गई उनकी पुस्तकें 'हिंदी बाल कविता का इतिहास' और 'हिंदी बाल साहित्य का इतिहास' छपीं तो पूरे बाल साहित्य जगत में इनका स्वागत हुआ। अभी हाल में उनकी आत्मकथा 'मैं मनु' भी छपी है। इसी तरह उनकी पुस्तक 'यादें घर-आंगन की' में उनके लेखक होने की रोचक कहानी है। उनकी कई पुस्तकों का पंजाबी, सिंधी, मराठी, गुजराती, कन्नड़ समेत अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है। एक कहानी हिब्रू भाषा में भी छपी है। पुरस्कारों की उन्हें कभी लालसा नहीं रही, फिर भी कुछ पुरस्कार तो उन्हें मिले ही।

वर्ष 2010 में 'नंदन' के संपादन से अवकाश पाने के बाद फिर से उनके जीवन की एक नई डगर शुरु हुई। सुबह से रात तक वह अपनी मेज पर बैठकर काम करते हैं। वह प्रसिद्ध साहित्यकारों के संस्मरणों के अलावा अपनी आत्मकथा पर काम कर रहे हैं जिसके तीन खंड अभी आने बाकी हैं।

वह ईश्वर से बस एक ही चीज मांगते हैं कि अपने जीवन की अंतिम सांसों तक वह लिखते-पढ़ते रहें। जब इस दुनिया से जाएं तब भी कलम और किताब उनके हाथ में हो। इसके अलावा उनकी कोई चाह नहीं।

बच्चों के लिए लिखी पुस्तकें

◆ गंगा दादी जिंदाबाद, ◆ किस्सा एक मोटी परी का, ◆ चश्मे वाले मास्टर जी, ◆ नानी का घर और किस्से गोगापुर के, ◆ मैं जीत गया पापा, ◆ चिन-चिन चूँ, ◆ मातुंगा जंगल की अचरज भरी कहानियां, ◆ मेरी प्रिय बाल कहानियां, ◆ इक्यावन बाल कहानियां, ◆ नंदू भैया की पतंगें ◆ प्रकाश मनु की चुनिंदा बाल कहानियां, ◆ गोलू भागा घर स, ◆ एक था दुनदुनिया, ◆ नटखट कुप्पू के अजब-अनोखे कारनामे, ◆ खजाने वाली चिड़िया, ◆ अजब मेला सब्जीपुर का, ◆ चार बाल उपन्यास, ◆ किस्सा चमचम परी और चिड़ियाघर का, ◆ प्रकाश मनु की श्रेष्ठ बाल कविताएं, ◆ इक्यावन बाल कविताएं, ◆ मेरी प्रिय बाल कविताएं, ◆ मेरे प्रिय शिशुगीत, ◆ मुनमुन का छुट्टी-क्लब, ◆ इक्कीसवीं सदी के बाल नाटक, ◆ बच्चों के अनोखे हास्य नाटक, ◆ बच्चों को सीख देते अनोखे नाटक, ◆ विज्ञान फंतासी कथाएं, ◆ अनोखी विज्ञान कथाएं, ◆ सुनो कहानियां ज्ञान-विज्ञान की, ◆ मेरी संपूर्ण बाल कविताएं, ◆ अजब-अनोखी शिशुकथाएं (तीन खंड), ◆ मेरी संपूर्ण बाल कहानियां (तीन खंड), ◆ मेरे संपूर्ण बाल नाटक (दो खंड), ◆ प्रकाश मनु के संपूर्ण बाल उपन्यास (दो खंड)

पुरस्कार

1995 : कविता-संग्रह 'छूटता हुआ घर' पर प्रथम गिरिजाकुमार माथुर स्मृति पुरस्कार।

2006 : हिंदी अकादमी का 'साहित्यकार सम्मान'।

2010 : बाल उपन्यास 'एक था दुनदुनिया' पर साहित्य अकादेमी का पहला बाल साहित्य पुरस्कार।

2012 : उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान के 'बाल साहित्य भारती पुरस्कार' से सम्मानित।

2019 : बजाज घराने की अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था 'शब्दम' द्वारा बाल साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए सम्मानित।

संपर्क :
545, सेक्टर-29,
फरीदाबाद-121008 (हरियाणा)
मो. 09810602327
email : prakashmanu333@gmail.com

पायस

पढ़ें-पढ़ाएं,
सदस्य बनें, बनाएं,
पायस को आगे बढ़ाएं
7982014609

मीठी शरारत

"इस बार हम भी अच्छे वाले रंगों से होली खेलेंगे। मैं तो बड़ी सी पिचकारी भी लूंगा और पीले रंग वाली गुलाल भी।" मयंक ने अपनी फरमाइश रखी, तो उसकी मां उदास हो गई। बच्चे की बात सुनकर घर के अंदर घुसते-घुसते रामलाल के पांव दरवाजे पर ही थम गए।

होली का त्योहार आने वाला है। पूरे गांव के बच्चों में मस्ती छाई हुई है। रामलाल सोच-सोचकर दुखी हो रहा था कि हमेशा की तरह इस बार भी शायद वह अपने बच्चों की रंग, गुलाल और पिचकारी खरीदने की इच्छा पूरी नहीं कर पाएगा।

गांव में चौकीदारी करके अपने परिवार का पेट पालने वाले रामलाल को मिलने वाली पगार से तो उसके परिवार का रोज का खर्चा ही बड़ी मुश्किल से चलता है। साल भर पाई-पाई जोड़ने के बाद भी वह अपने बच्चों की सभी जरूरतें पूरी नहीं कर पाता, तो ये रंग-गुलाल कैसे खरीदा जाएगा। हर साल उसके बच्चे यानी मयंक और उसकी छोटी बहन छुटकी गांव के बड़े घरों में होली खेल चुकने के बाद बचे-खुचे रंग इकट्ठा करके अपना शौक पूरा करते हैं। रामलाल को अपने बच्चों के उतरे हुए चेहरे देख कर बहुत दुख होता है।

रात में रामलाल जब अपनी ड्यूटी कर रहा था तो उसने सरपंच जी के घर के बाहर कुछ लोगों का जमघट देखा। पास जाकर देखा, तो ये सरपंच जी की बेटी मिनकी और उसके दोस्त थे।

"कहीं बच्चे होली पर कोई शरारत करने की योजना तो नहीं बना रहे।" सोचकर रामलाल छिपकर उनकी बातें सुनने लगा। जैसे-जैसे वह उनकी योजना को समझता जा रहा था, वैसे-वैसे उसकी आंखें आश्चर्य से फैलती जा रही थी। साथ ही उनकी चमक भी बढ़ती

जा रही थी। कुछ ही देर में वो जमवाड़ा खत्म हो गया, तो रामलाल भी 'जागते रहो' की हांक लगाता हुआ अपनी ड्यूटी करने लगा।

होली के दिन की सुबह सरपंच जी के घर पर सारे बच्चे जमा थे। ननकू, मानू, पिंकी आदि सब अपने-अपने घर से तरह-तरह के रंग लेकर आए थे। मिनकी ने एक बड़े से टब में सारे रंग मिल दिए, तो एक अलग ही नया रंग तैयार हो गया। बिल्कुल गहरा, गाढ़ा नीला रंग।

मिनकी के सब दोस्तों ने मिलकर उसे गुब्बारों में भर लिया और शिकार की तलाश में घात लगाकर इधर-उधर छिपकर बैठ गए। बचे हुए रंग-गुलाल आदि उन्होंने छिपाकर रख दिए ताकि किसी को कोई शक नहीं हो।

तभी पिंकी भागती हुई आई और बोली, "सावधान! हमारा पहला शिकार आ रहा है।"

यह रामलाल था। सबने अपने-अपने रंग से भरे हुए गुब्बारे संभाल लिए और जैसे ही रामलाल उनके पास आया, मिनकी ने हाथ उठाकर इशारा किया और देखते ही देखते रामलाल पर रंगीन गुब्बारे बरसने लगे।

यूं अचानक हुए इस हमले से रामलाल घबरा गया और वहीं जमीन पर पसर गया। उसके नीचे गिरते ही बच्चे अपनी-अपनी छिपने की जगह से बाहर निकल आए और अपनी सफलता पर खुश होकर झूमने लगे।

एक-दो नहीं पूरे पांच मिनट बीत गए। रामलाल के शरीर में कोई हरकत नहीं हुई। बच्चे घबरा गए। पिंकी ने जरा पास जाकर देखा, तो रामलाल अचेत पड़ा था।

"ये तो मर गया लगता है।" उसने सबको कहा।

"हुंह! गुब्बारे की चोट से भी कोई मरता है भला?" मिनकी ने अपनी घबराहट छिपाते हुए कहा। उसे ही सबसे ज्यादा डर लग रहा था। सारी योजना की सूत्रधार तो आखिर वही थी।

"गुब्बारे की चोट से तो कोई नहीं मरता, मगर हो सकता है कि अचानक हुए इस हमले से उसका हार्ट फेल हो गया हो। मेरा दादाजी कहते हैं कि ऐसा हो सकता है।" मानू ने आशंका जताई, तो मिनकी का डर और भी बढ़ गया। उसे पुलिस और साथ ही जेल की सलाखें नजर आने लगी।

"सुनो! जो कुछ हुआ, सब भूल जाओ और अपने-अपने घर जाओ। इस हादसे के बारे में कोई किसी को कुछ नहीं बताएगा। और हां! सब ये कसम ये खाएंगे कि भविष्य में ऐसी कोई शरारत नहीं करेंगे जिससे किसी को चोट पहुंचे।" ननकू ने आखिरी फैसला सुनाते हुए कहा, तो सबने सिर हिलाकर अपनी सहमति दे दी।

अगले दस मिनट बाद वहां कोई नहीं था। रामलाल ने धीरे से आंख खोलकर देखा, तो दूर-दूर तक सन्नाटा पसरा था। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ा, तो छिपाकर रखीं रंग-गुलाल की थैलियां और पिचकारी दिखाई दीं। उन्हें बेकार समझ उसने उठा लिया और घर की तरफ चला। वह आज बहुत खुश था। उसने बच्चों को शरारत करने से रोक लिया था।

घर पहुंचकर जैसे ही उसने मयंक को रंग, गुलाल और नई पिचकारी दी, वह खुशी से उछल पड़ा। रामलाल अब मुसकराते हुए छुटकी को पिचकारी देने के लिए आगे बढ़ा। वह पलटा ही था कि दरवाजे पर खड़ी मिनकी और उसके दोस्तों की सेना देखकर उसके होश उड़ गए। वह अचकचाकर इधर-उधर देखने लगा।

"बुरा न मानो होली है।" कहते हुए सब बच्चों ने मयंक और उसकी छोटी बहन पर रंग भरे गुब्बारों की बौछार कर दी। गुब्बारे की मार से घबराई छुटकी भी रामलाल की तरह ही जमीन पर गिर गई लेकिन वह अचेत नहीं हुई, बल्कि खुशी से खिलखिला रही थी।

"चाचा, हमने आपको कल देख लिया था। यह सब हमारा प्लान था, पर आपने ज्यादा अच्छी एक्टिंग की। आज से ये दोनों भी हमारी मंडली के सदस्य हैं। अब हर साल हम सब साथ-साथ होली खेलेंगे।" मिनकी ने मयंक के गाल पर नीला गुलाल मलकर उसे रंगा सियार बनाते हुए कहा।

बच्चे देर तक होली खेलते रहे। अच्छे वाले रंगों और बड़ी सी पिचकारी से। रामलाल खुशी से फूला नहीं समा रहा था। ❀

अपने लेखक को जानिए

आशा शर्मा : **राजस्थान सरकार के विद्युत विभाग में सहायक अभियंता। साथ ही लेखन भी। अब तक 6 संग्रह प्रकाशित। करीब बीस पत्र-पत्रिकाओं में सैंकड़ों रचनाएं प्रकाशित। राजस्थान साहित्य अकादमी एवं जिला प्रशासन, बीकानेर सहित दर्जनों राष्ट्रीय स्तर के सम्मान एवं पुरस्कार। दूरदर्शन एवं आकाशवाणी पर रचनाएं प्रसारित। रचनाओं का नेपाली, अंग्रेजी, पंजाबी, उड़िया, सिंधी, कन्नड़, तमिल एवं राजस्थानी भाषा में अनुवाद**

खुद ही बनाएं रंग

होली का त्योहार तुम बच्चों को काफी पसंद होता है क्योंकि इसमें वह एक दूसरे के साथ खूब मस्ती कर सकते हैं और एक दूसरे को रंग लगा सकते हैं।

लेकिन यदि आपको रंगों से एलर्जी है, तो आप इस बार प्राकृतिक रंग बना सकते हैं। यह आपके लिए एक फन एक्टिविटी भी हो जाएगी और साथ ही इन प्राकृतिक रंगों से कोई नुकसान भी नहीं पहुंचेगा।

आप को रंग बनाने के लिए बेसन, मैदा या फिर कॉर्न फ्लोर की जरूरत होगी। इन रंगों से आप को एलर्जी भी नहीं होगी। इस होली को आप पूरी तरह से केमिकल मुक्त और प्राकृतिक बना सकते हैं।

तो आइए जानते हैं किस प्रकार आप प्राकृतिक रंग बना सकते हैं।

पीला रंग :

हल्दी को बेसन में मिला दें। इन दोनों को काफी अच्छे से मिक्स कर लें। मिक्स करने के लिए इन्हें दोनों हथेलियों के बीच में रखकर मसलें। हल्दी और बेसन का रेशों 1ः 4 होना चाहिए। इसके बाद इन दोनों को किसी अच्छे से स्ट्रेनर की मदद से छान लें। केवल एक बार ही नहीं, दो से तीन बार इसे छानें। आपका पीला रंग तैयार है।

लाल रंग :

हल्दी के पाउडर को थोड़ा फैला लें और उसमें नींबू का रस निचोड़ दें। नींबू का एसिडिक नेचर होने की वजह से वह हल्दी के साथ मिलकर लाल रंग में परिवर्तित होने लगेगा। इसे एक अंधेरे कमरे में रखें, जहां सूर्य की रोशनी न आ सके ताकि यह कुछ समय बाद सूख सके। जैसे ही यह सूख जाता है, तो इसे एक बार अपनी दोनों हथेलियों के बीच रख कर मसलें और फिर छान लें। इसे भी दो से तीन बार छानें। अब आपका लाल रंग भी तैयार है।

गुलाबी रंग :

गुलाबी रंग लड़कियां काफी पसंद करती हैं। सबसे पहले हल्दी पाउडर को लें और इसमें लाल रंग के मुकाबले थोड़ा कम नींबू का रस मिलाएं ताकि लाल रंग बनने की बजाय थोड़ा हलका रंग बन पाए। इसके बाद इसे सूखने के लिए एक कमरे में रख दें जहां सूर्य की रोशनी न आती हो। सूखने के बाद इसे हाथों में लेकर मलें और फिर दो से तीन बार छान लें।

हरा रंग :

सबसे पहले मेहंदी लें और इतनी ही मात्रा में मैदा लें। दोनों की मात्रा एक समान होनी चाहिए। इन दोनों को एक दूसरे में मिला दें और दो से तीन बार छान लें। अब आपका हरा रंग भी तैयार है। मेंहदी सूखी हुई लें और इसके बाद स्किन पर पानी न गिरने दें नहीं तो मेंहदी का रंग स्किन पर रच सकता है।

ब्राउन रंग :

200 ग्राम कॉफी पाउडर लें और उसे पानी में तब तक उबालें जब तक उसका रंग ब्राउन नहीं हो जाता। जैसे ही यह ठंडा हो जाए तो इस पानी को कॉर्न फ्लोर में मिला दें। कॉर्न फ्लोर डेढ़ किलो होना चाहिए। इसे अपने हाथों के साथ मिलाएं और एक दिन तक सूखने के लिए छोड़ दें। अब इसे कुछ समय छान लें। इसमें थोड़ी खुशबू एड करने के लिए आप गुलाब जल भी मिला सकते हैं।

पर्पल रंग :

4 से 5 गाजर लें और उन्हें छील कर ग्रेट कर दें। इसके बाद ग्राइंडर में पीस दें। अब इसे 250 ग्राम कॉर्न फ्लोर में मिला दें। खुशबू के लिए इसमें थोड़ा सा गुलाब जल भी मिला सकते हैं। अब इसे सूखने के लिए छोड़ दें और सूखने के बाद इसे छान लें।

ग्रे रंग :

आंवला के बीजों को निकालकर उसे मिक्सर में पिस दे। अब इस रस को कॉर्न फ्लोर में मिला दें। इसे सूखने के लिए छोड़ दें और बाद में छान लें।

हर रंग के प्राकृतिक कलर तैयार हैं। बस ध्यान रखें कि इनमें फूड कलर मिक्स न करें। वह प्राकृतिक नहीं होती है। हां, इसे गुलाल की तरह बिन पानी के खेलें। ❀

अपने लेखक को जानिए

मोनिका अग्रवाल : शिक्षा : समाज शास्त्र में स्नातक और कंप्यूटर इंजीनियरिंग डिप्लोमा। सम्प्रति : 'अनुगूंज' कहानी संग्रह; 'पतझड़ में मधुमास' कहानी संग्रह; 'किड्स स्टोरीज' बाल कहानी संग्रह; 'अम्मा कहती थी' सांझा काव्य संग्रह! पत्र-पत्रिकाओं में नियमित रूप से रचनाएं प्रकाशित होती रहती हैं।

इरादा बदल गया

“**इस** बार हम पड़ोस वाले चाचा को काला रंग लगाएंगे।” अंकुर ने फुसफुसाते हुए मनीष से कहा।

मनीष ने अंकुर का हाथ पकड़ते हुए कहा, हां, ताकि उन्हें पता चले कि साल भर तक बच्चों को रोक-टोक करने से क्या होता है।”

“मुझे तो यह सोचकर ही बड़ा मजा आ रहा है कि उनका मुंह रेलगाड़ी के इंजन से भी ज्यादा काला हो जाएगा तो कैसा लगेगा!” पीयूष खिलखिलाते हुए बोला।

सभी बच्चे जोरों से हंस पड़े। तभी रोली दौड़ते हुए आई और बोली, “किसी को याद भी है कि शर्मा सर ने होली के बारे में लिखकर लाने के लिए कहा था।”

“हां, अभी तो बहुत दिन है। जब छुट्टियां खत्म होने वाली होंगी, तब आराम से लिखेंगे।” अंकुर ने रोली को देखते हुए कहा।

“तुम लोगों का तो सच में कुछ नहीं हो सकता। कल होली है और उसके एक दिन बाद हमारा स्कूल खुल जाएगा।” रोली ने जवाब दिया।

“ओहो, सारा समय कितनी जल्दी निकल गया।” मीतू ने कहा।

“और कल तो सारा दिन होली खेलने में ही निकल जाएगा और परसों हमारे मोहल्ले में सांस्कृतिक कार्यक्रम है, जिसमें हम भी भाग ले रहे हैं।” अंकुर चिंतित स्वर में बोला।

“और अगर शर्मा सर का दिया हुआ गृहकार्य नहीं किया, तो वह अगली होली तक हमें रोज मुर्गा बनाएंगे।” रोली डरते हुए बोली।

शर्मा सर का चेहरा याद आते ही सभी बच्चे चुप हो गए और गृहकार्य के लिए सोचने लगे।

तभी मीतू बोला, “अगर इस समय कोई हमारी मदद कर सकता है तो वह है मालू चाचा!”

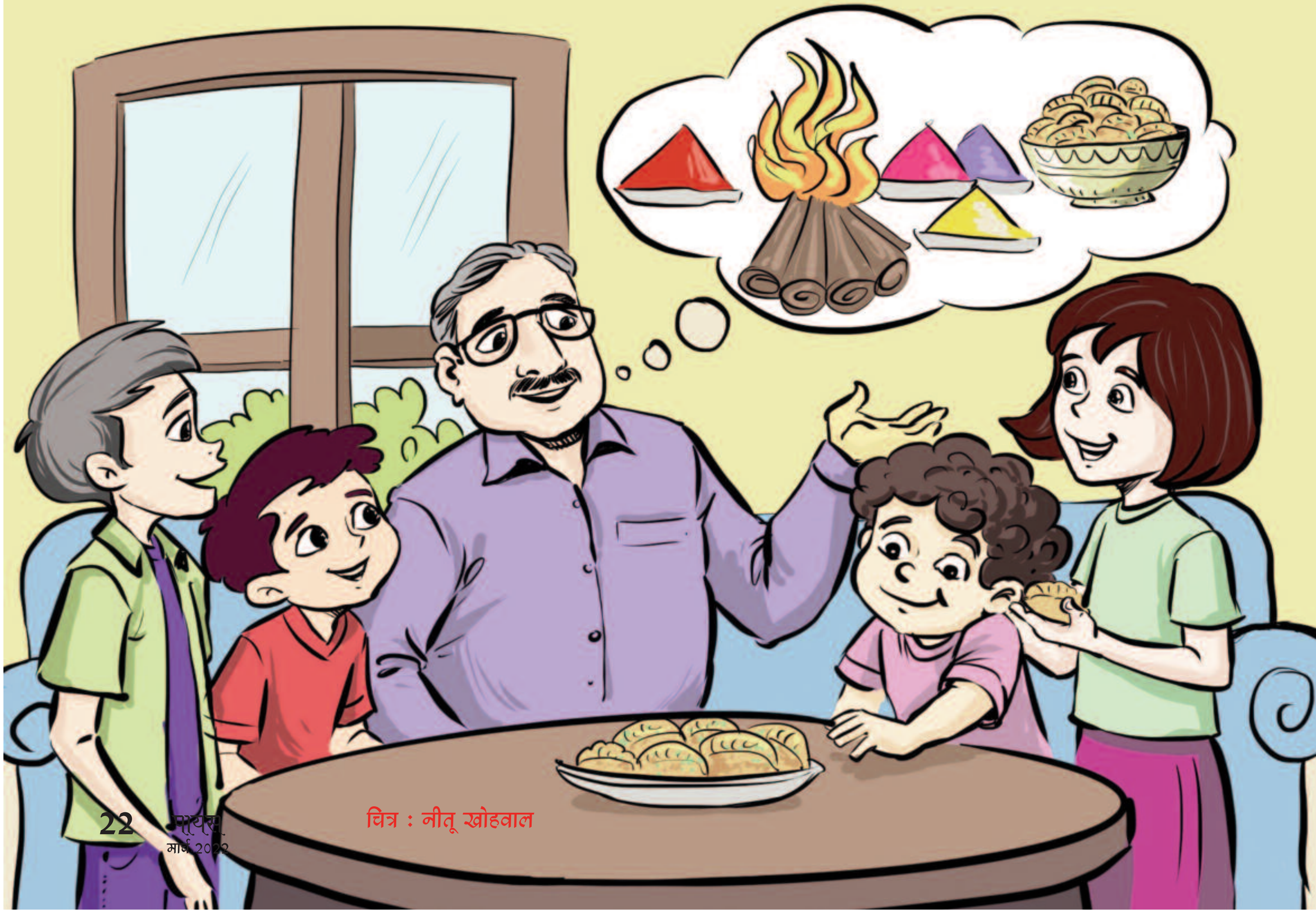

चित्र : नीतू खोहवाल

"तुम बिल्कुल सही कह रहे हो। वह इतनी सारी किताबें पढ़ते हैं कि उन्हें सब पता रहता है।"

"पर थोड़ी देर पहले तो तुम उन पर काला रंग डालने की बात कर रहे थे।" मीतू बोला

"अब आपस में मत लड़ो और जल्दी से मालू चाचा के घर चलो, वरना शर्मा सर हमें भालू चाचा बना देंगे।" कहते हुए रोली मुसकरा दी।

कुछ ही देर बाद सभी बच्चे दौड़ते भागते हुए मालू चाचा के घर पहुंच गए। मालू चाचा बगीचे में पौधों को पानी डाल रहे थे। बच्चों को देखते ही उनके चेहरे पर मुसकान छा गई।

तभी उनकी नजर अंकुर की चप्पल पर पड़ी तो नाराजगी भरे स्वर में बोले, "कितनी बार कह चुका हूं कि पापा या मम्मी की चप्पल पहनकर घर से बाहर मत निकला करो। सही नाप नहीं होने के कारण तुम कितनी बार गिर भी चुके हो।"

अंकुर ने मालू चाचा की तरफ देखा, उसे उनकी आंखों में भी वही चिंता और प्यार दिखाई दिया, जो उसकी मम्मी और पापा की आंखों में होता है। आज पहली बार उसे लगा कि मालू चाचा जब बच्चों को किसी बात के लिए रोकते है, तो वह बच्चों की भलाई के लिए ही होता है और एक वह है जो उन्हीं के मुंह पर काला रंग पोतने के लिए सुबह से सोच रहा है।

तभी रोली बोली, "चाचा, होली क्यों मनाई जाती है?"

"आज तक तो तुम लोगो ने कभी नहीं पूछा।" मालू चाचा ने आश्चर्य से कहा।

"चाचा, हमें गृहकार्य मिला है, पर हमें सच में ये जानना है कि होली मनाने की शुरुआत कैसे हुई?"

मालू चाचा बोले,"मैं अभी आया।" और यह कहते हुए वह तीर की तरह कमरे के अंदर चले गए।

"लगता है, होली के बारे में पढ़ने के लिए गए है।" मीतू ने कमरे की तरफ देखते हुए कहा

तभी मालू चाचा एक हाथ में गुझिया की प्लेट पकड़े हुए आए। रोली ने तुरंत चाचा के हाथ से प्लेट ले ली और मेज पर रख दी।

मालू चाचा बोले, "अब सब बच्चे गुझिया खाओ और ध्यान से होली की कहानी सुनो।"

मीतू बोला, "चाचा, ये भी बताना कि होलिका दहन क्यों करते है?"

चाचा बोले, "हां, सब बताऊंगा। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार होलिका दहन के पीछे भक्त प्रह्लाद और होलिका की कथा है और यह कथा होली की सबसे प्रचलित कथाओं में से एक है।"

"प्रहलाद कौन था?" रोली ने पूछा

"हिरण्यकशिपु नाम का एक राजा था। प्रहलाद उसी का पुत्र था, और भगवान विष्णु का बहुत बड़ा भक्त था। पर उसके पिता खुद को भगवान समझते थे। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि प्रहलाद भगवान विष्णु की बहुत पूजा करता है, तो उन्होंने प्रहलाद को रोकने का हरसंभव प्रयास किया और उसे बहुत समझाया कि वह विष्णु की पूजा करना छोड़ दे लेकिन प्रहलाद नहीं माना, क्योंकि उसके तो तन-मन में श्री हरी विष्णु समा चुके थे।

इस बात से नाराज होकर हिरण्यकशिपु अपने बेटे प्रह्लाद को मार डालने के लिए बहुत सारे उपाय किए, पर भगवान विष्णु ने हर बार प्रह्लाद को बचा लिया। जब सारी कोशिशें विफल हो गईं तो उसने अपनी बहन होलिका की मदद ली।

होलिका को भगवान शंकर से वरदान मिला हुआ था। उसे एक ऐसी चादर मिली थी जिसे ओढ़ने पर अग्नि का उस पर कोई असर नहीं हो सकता था। होलिका प्रहलाद को अपनी गोद में लेकर अग्नि में बैठ गई और उस चादर को ओढ़ लिया। लेकिन प्रहलाद बच गया और उसकी जगह होलिका ही जल गई।

उस दिन से लेकर आज तक होलिका दहन की परम्परा है और इस अवसर को याद करके होली मनाई जाती है।"

अपनी बात खत्म करते हुए मालू चाचा ने बच्चों की तरफ मुसकराते हुए देखा जो एकटक उनकी ओर देख रहे थे।

अंकुर बोला, "हम भी प्रह्लाद की तरह बनेंगे और ईश्वर पर पूरा विश्वास रखेंगे।"

"हां, जो भी भगवान पर भरोसा करता है उस की सहायता भगवान अवश्य करते है।" मालू चाचा ने सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा।

"चाचा, हम सब कल होली खेलने आएंगे, अभी हम जल्दी से अपना गृहकार्य पूरा करने जा रहे है।" कहते हुए बच्चों जाने लगे। मीतू भागते हुए ही बोला, "तो फिर मालू चाचा के लिए कौन सा रंग लाओगे?"

"पीला रंग, जो मैं पापा के लिए लाऊंगा।" कहते हुए अंकुर ने अपनी आंसू भरी आंखें धीरे से पोंछ ली। ❀

रचनाकार को जानिए

मंजरी शुक्ला : हिंदी एवं अंग्रेजी में स्वतंत्र लेखन, बाल साहित्य की बारह पुस्तकें प्रकाशित, सभी स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में कहानियां प्रकाशित। अब तक सैकड़ों कहानियों का सृजन कर चुकी हैं। आजकल आकाशवाणी कुरुक्षेत्र में उद्घोषक।

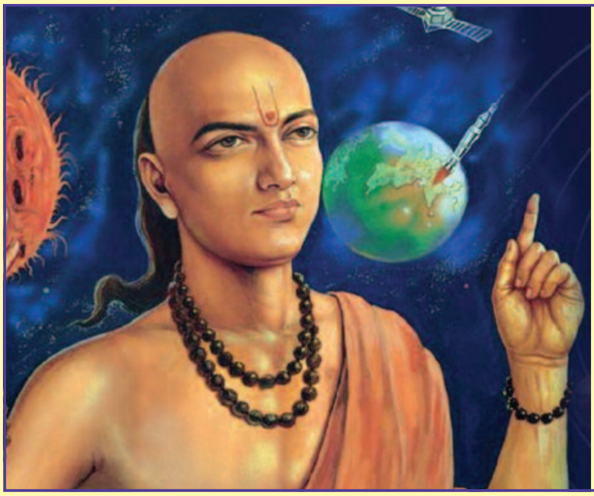

गणित व खगोल शास्त्र का सबसे चमकीला सितारा : आर्यभट्ट

बच्चो, गणित व खगोल शास्त्र का विश्व में सबसे चमकीला सितारा आर्यभट्ट ही हैं। भारत में विज्ञान की उज्जवल परंपरा रही है, विशेष रूप से गणित, खगोल विज्ञान, रसायन एवं चिकित्सा क्षेत्र में। प्राचीन काल में स्थापित मानदंड बहुत समय तक भाषा अवरोध के कारण आधुनिक पश्चिमी विज्ञान पहचान नहीं सका था। परिणामस्वरूप यहां के वैज्ञानिकों को अपेक्षित मान्यता नहीं मिली। पिछली सदी के महानतम वैज्ञानिक आइंस्टाइन ने लिखा कि, 'हम ऋणी हैं भारतीयों के, जिन्होंने हमें शून्य का ज्ञान दिया और गणना का पाठ पढ़ाया, जिसके अभाव में आज के महानतम वैज्ञानिक शोधें संभव न थी।'

आर्यभट्ट की शून्य की खोज व खगोल शास्त्र की अभूतपूर्व जानकारी वास्तव में विश्व को एक अमूल्य योगदान है।

आर्यभट्ट का जन्म 476 ई. में हुआ था। विद्वानों ने आर्यभट्ट का जन्म मेष संक्रांति, 21 मार्च को हुआ माना है। वे बचपन से ही तेज बुद्धि थे तथा गणित और ज्योतिषी के अध्ययन में गहन रुचि लेते थे। वे आंख मूंदकर प्रचलित पुरानी बातों को नहीं मानते थे, सदा ही अपनी विचारधारा को तथ्यों के साथ, बिना किसी डर के और बिना किसी झिझक के प्रस्तुत कर देते थे।

आर्यभट्ट मूलतः कहां के थे, इस बारे में ठोस प्रमाण नहीं मिला। आर्यभट्ट की स्वयं की कृति के एक श्लोक के अनुसार कुसुमपुर में इनका जन्म माना जाता है, जो बाद में पाटलीपुत्र कहलाया।

आर्यभट्ट की शिक्षा के विषय में मत है कि गणित और ज्योतिष के अध्ययन के लिए वे अशमक जनपद से पाटलीपुत्र पहुंचे थे, क्योंकि उस समय यह उच्च शिक्षा का केंद्र था। विश्व विख्यात नालंदा विश्वविद्यालय इसी राज्य में था। इसी विश्वविद्यालय में खगोल शास्त्र के अध्ययन के लिए एक विशेष विभाग भी था। यह भी पता चला कि आर्यभट्ट नालंदा विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे थे।

सबसे अहम बात थी कि आर्यभट्ट ने उस समय प्रचलित ब्रह्म लिपि का प्रयोग न करके वर्णों (alphabets) का प्रयोग किया और श्लोक सूत्र साहित्य के माध्यम से अपने आविष्कार को ग्रंथों में लिखा।

आर्यभट्ट विश्व के प्रथम महान नक्षत्र विज्ञानी थे। आर्यभट्टीयम उनका महान ग्रंथ है, जिसकी रचना इन्होंने मात्र 23 साल की उम्र में की। यह श्लोक रूप में प्रयुक्त एक सूत्र ग्रंथ है, जो संख्याओं को निर्देशित करने के लिए बिल्कुल नई

पद्धति है। जिसके द्वारा उन्होंने अत्यंत जटिल गणना की चर्चा संक्षेप में कर दी। उन्होंने अक्षरों और मात्राओं से संख्या बताने की विधि निकाली।

आर्यभट्टीयम को विषयानुसार 4 पदों में बांटा गया है, गीतिकापाद, गणितापाद, कालक्रियापाद और गोलापाद।

आर्यभट्टीयम में वर्णित कुछ मुख्य बातें इस प्रकार हैं-

1. आर्यभट्ट को ही पाई का मूल्य निश्चित करने वाला प्रथम व्यक्ति बताया गया है।

2. पृथ्वी स्थिर नहीं है, स्थिर तो आकाश का तारामंडल है। पृथ्वी ग्रह, चंद्र इनमें स्वयं का प्रकाश नहीं है। सूर्य की कांति से ये उज्जवल दिखाई देते हैं। पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है।

3. भूमि गोलाकार रहने के कारण और विविध नगरों को रेखांतर होने के कारण ही अलग-अलग स्थानों में अलग-अलग कालों में सूर्योदय-सूर्यास्त होते हैं। जब लंका में सूर्योदय होता है तब सिद्धपुर में सूर्यास्त हो जाता है। तब यवकोटि में मध्याह्न और रोमक प्रदेश में अर्धरात्रि होती है।

4. आर्यभट्ट ने महायुगों को चार युगों में विभाजित करके उन्हें समान बताया है। प्रतियुग में भी 10,80,000 वर्ष होते हैं।

5. आर्यभट्ट द्वारा प्रकाश के सम्मुख रहने वाली वस्तु की छाया को नापने के लिए दिए गए सूत्र बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमारे चिरपरिचित चंद्र-सूर्य ग्रहण होने के तरीके यही हैं।

6. बीज गणित को प्रारंभ करके प्रयुक्त करने वाला भारतीय गणित शास्त्रज्ञ के आर्यभट्ट ही थे। उससे पहले बीज गणित का प्रचलन दिखाई नहीं देता। गणित के प्रश्नों को सरलता से हल करने के लिए समीकरणों का आविष्कार किया, जो पूरे विश्व में प्रख्यात हैं।

7. यद्यपि त्रैराशिक आर्यभट्ट से पहले भी रूढ़ था, फिर भी उसे प्रकट करने की ख्याति आर्यभट्ट को ही मिली है। गणित में उसे अत्युत्तम नियम कहा जाता है। इस गणित में तीन अंशों को देना अनिवार्य होने के कारण इसे त्रैराशिक कहा जाता है। आर्यभट्ट ने यह सूत्र दिया है, 'फल राशि को इच्छा राशि से गुणा करके आए हुए को प्रमाण राशि से भाग देने पर इच्छाफल प्राप्त होता है।'

8. खगोलशास्त्र से संबंधित आर्यभट्ट की एक और प्रमुख कृति थी 'आर्यभट्ट सिद्धांत', जिसके मात्र 34 खगोल श्लोक सूत्र मिले हैं। इनमें सूर्य सिद्धांत का प्रयोग कर अनेक यंत्रों का आविष्कार किया

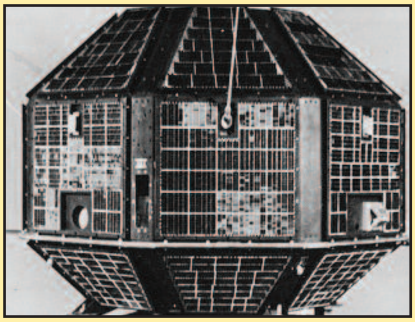

गया।

9. आर्यभट्ट ने नई अंक पद्धति विकसित कर वृंद अर्थात अरब तक के दश गुणोंत्तर संख्या संज्ञाएं देकर लिखा है कि इनमें प्रत्येक स्थान अपने पिछले स्थान से दश गुना है। एक के बाद ग्यारह शून्य जैसी संख्याओं को बोलने के लिए उन्होंने नई पद्धति (दशमलव प्रणाली) का विकास किया।

आर्यभट्ट कितने वर्षों तक जीवित रहे, इसकी जानकारी उपलब्ध न होते हुए भी शिकागो नगर से प्रकाशित संसार के वैज्ञानिकों के बारे में जानकारी देने वाली कृति में

अपने लेखक को जानिए

डॉ. शील कौशिक : एमएससी, एलएलबी, एम.एच.एम (होम्योपैथी)। प्रकाशित पुस्तकें : 30 (मौलिक : 21, सम्पादित : 5, अनुवादित : 3, लेखिका पर पुस्तक-1)। कुछ के नाम : बचपन के आईने से, धूप का जादू, करें तो क्या करें, माशी की जीत, बालकविता-संग्रह : बिल्लो रानी।

अंकित किया गया है कि आर्यभट्ट सन 550 ई. तक जीवित रहे।

भारतीय वैज्ञानिकों में आर्यभट्ट का विशेष व महत्वपूर्ण स्थान है। वे प्रथम ऐसे आचार्य थे, जो देव-कोटि या ऋषि-कोटि में नहीं आते, परंतु उनका सम्मान वैसा ही है। भारतवर्ष में तीन प्रकार की ज्योतिष पद्धतियों, सौर पद्धति, ब्रह्मा पद्धति तथा आर्य सिंद्धात पद्धति में से खगोल-गणित शास्त्रों में अपार ज्ञान प्राप्त, इनकी आर्य सिद्धात पद्धति पंचांग के निर्माण में कश्मीर से कन्याकुमारी तक व्यापक रुप से काम में लाई जाती थी। गणित में पाई का निश्चित मान और शून्य की स्थानीय मानक पद्धति की खोज, बीज गणित, त्रिकोणमिति और खगोलविज्ञान का आर्यभट्ट की देन के रूप में विशेष महत्त्व है। इतना ही नहीं उन शास्त्रों की व्यापक अभिवृद्धि के लिए यह कृति नींव की भांति है। सैद्धांतिक रीति से प्रारंभ करके खगोल में नूतन परिकारों का उपयोग करने वाला यही है।

19 अप्रैल, सन 1975 को भारत में निर्मित प्रथम कृत्रिम उपग्रह 'आर्यभट्ट' को यह नाम इसी आद्य गणिताचार्य एवं खगोलशास्त्री की स्मृति में दिया गया था। ❀

नए साल का नया कैलेंडर

मार्च-अप्रैल में भारतीय नव वर्ष शुरू हो जाता है। पर धीरे-धीरे हम इस भारतीय नववर्ष और महीनों को भूलते जा रहे हैं।

चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष और फाल्गुन! ये हैं भारतीय महीनों के नाम। हम अपने तिथि-त्योहार इन्हीं महीनों के आधार पर मनाते हैं।

हिंदी पंचांग के अनुसार वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर ऋतुएं भी इन्हीं महीनों के अनुसार आती हैं।

हम अपने भारतीय कैलेंडर के महीनों को अच्छे से याद रख सकें, इसीलिए सिंगापुर की अलका और भारत की डॉ अनुपमा गुप्ता ने यह प्यारा सा टेबल कैलेंडर तैयार किया है। इसमें रंग-रंगीली वारली आर्ट में बनी

पेंटिंग्स हैं और मन को छू लेने वाली कविताएं भी। तारीख़ें न होने से इसे सालों-साल सजाकर रखा जा सकता है और उपहार भी दिया जा सकता है।

कैलेंडर की कीमत मात्र 315 रुपए है। एक सबसे ज़रूरी बात। बिक्री से प्राप्त यह राशि उन बच्चियों के काम आने वाली है जो देख नहीं सकतीं।

प्रस्तुति : शंकर लाल गुप्त (दृष्टिबाधित)
निदेशक-दृष्टि
(दृष्टि बाधितों के लिए संस्था)

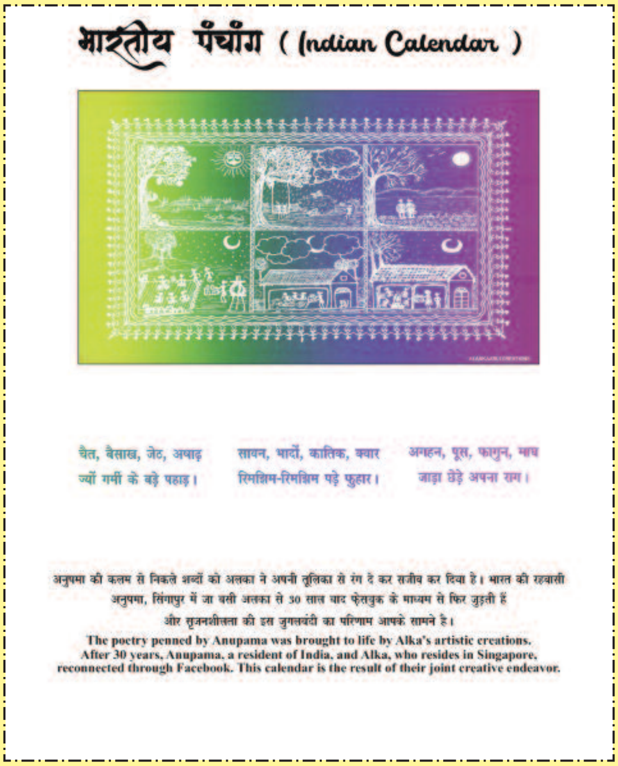

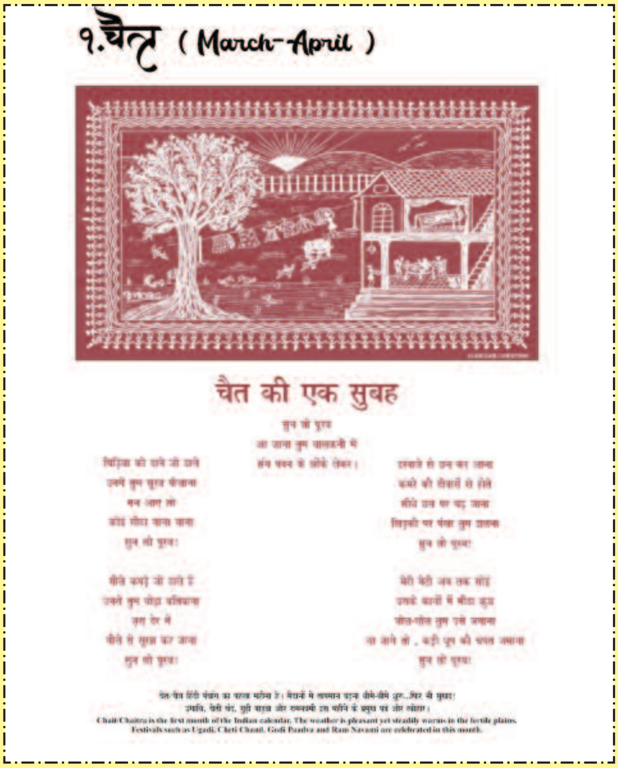

कैसे प्राप्त करें

9722157193 मोबाइल नंबर पर व्हाट्सएप मैसेज भेज कर ऑर्डर किया जा सकता है।

बड़े काम की–दस बातें

यदि आप मुझे भी अपनी ही उम्र का बालक समझ रहे हैं, तो आपका अनुमान गलत है। हा...हा... हा... वैसे बता दूं कि आपके पापाजी के पापाजी को मैं भाई साहब कहता हूं या वे मुझे भाई साहब कहते हैं।

मुझे भरोसा है, अब जो मैं आपसे कहने जा रहा हूं, आप उसे ध्यान से सुनेंगे।

अरे...! पहले अपनी पिचकारी और ये गुलाल की थैली एक जगह ठिकाने से रख दो...।

हां, अब ठीक है। आओ गोल घेरा बनाकर बैठ जाते हैं।

तो अब सुनो-

पहली बात तो यह कि होली मौज मस्ती और मिलने-जुलने का त्योहार है। हम भी मौज-मस्ती करेंगे और सबसे मिलेंगे-जुलेंगे लेकिन जितना संभव हो, उतनी दूरी बनाकर ही मिलेंगे-जुलेंगे।

दूसरी बात : बाजार से लाए रंगों की अपेक्षा यदि घर पर ही रंग बना सकें, तो और अच्छा रहेगा।

पालक, शलजम, हल्दी पलाश आदि के रंग अपने बड़े भैया, दीदी या पापा जी की सहायता से बनाकर देखो, बहुत मजा आएगा।

तीसरी बात : अपने ही दोस्तों के बीच, घर के आसपास ही किसी के आंगन में या कहीं छांव में होली खेलें। हुरयारों की टोली में भूलकर भी शामिल मत हो जाना। वहां किसी को किसी की सुध नहीं रहती। तो भैया अपन भले और अपने दोस्तों की टोली भली।

चौथी बात : पानी उतना ही उपयोग करो जितना बहुत जरूरी है। ऐसा न हो कि तुम एक बालटी पानी भरकर पिन्नू के ऊपर डालो, मगर पिन्नू के शरीर पर एक बूंद भी न गिरे और सारा पानी मिट्टी में मिल जाए। बाद में आपको रगड़-रगड़कर नहाने के लिए पानी ही न मिले। वैसे भी पानी को व्यर्थ बहाना नादानी है।

पांचवी बात : आंख, कान, नाक मुंह में रंग-गुलाल न चला जाए, यह सावधानी बहुत जरूरी है।

छठी बात : होली में बनने वाले पकवानों में कई लोग भांग मिला देते हैं। कुछ भी खाने से पहले पता लगा लें कि कहीं उसमें भांग तो नहीं है।

सातवीं बात : सारा दिन होली न खेलें, एक दो घंटे भी बहुत होते हैं, उसके बाद किसी के पास न तो रंग बचता है न ही गुलाल। बस एक दूसरे के ऊपर पानी फेंकते रहते हैं। या आपस में छीना-झपटी करते रहते हैं।

अपने लेखक को जानिए

राजेन्द्र श्रीवास्तव : सेवा निवृत्त प्राचार्य (हाई स्कूल), पत्र पत्रिकाओं में बाल साहित्य का प्रकाशन, आकाशवाणी से भी यदा-कदा बाल कविता, कहानी का प्रसारण। बाल विधा की तीन पुस्तकें प्रकाशित।

आठवीं बात : रंगों से या दोस्तों से बचने के लिए किचन या बेडरूम या स्टडीरूम में भूलकर भी न जाएं, नहीं तो तुम्हारी वानर-सेना भी तुम्हारे पीछे-पीछे वहां पहुंच जाएगी। फिर परिणाम क्या होगा, तुम समझ ही रहे होगे। तुम्हारी किताबें भी होली खेलती नजर आएंगी। किचन में गए तो गुजिया गुलाबजामुन भी रंग-गुलाल में रंगे दिखेंगे।

नवमी बात : किसी से विवाद या झगड़ा न करें। किसी से कोई ऐसी बात न कहें कि उसे बुरा लगे। किसी की बात का बुरा भी न मानें।

और अब चलते-चलते **दसवीं बात** व आखिरी बात : हैप्पी होली....

मेरी बातों का बुरा मत मानना क्योंकि,

बुरा न मानो होली है...।

क्या विश्व युद्ध होगा

आज सारा विश्व टकटकी लगाए महाशक्ति रूस की ओर देख रहा है और रूस की निगाहें टिकी हैं उसके पड़ोसी देश यूक्रेन पर। रूस अपने फायदे के लिए यूक्रेन पर हमला करने से न चूका।

आज के युग में भी जब ग्लोबलाइजेशन के कारण कोई भी देश किसी युद्ध में जीतता नहीं है। उसे जीत नाम पर आज आर्थिक मोर्चे पर हारना ही पड़ता है, तब ऐसा भीषण युद्ध।

दरअसल यूक्रेन का रूस के लिए बड़ा महत्त्व है। आज से 30 साल पहले सोवियत संघ के बिखरने पर यूक्रेन अलग होकर एक स्वतंत्र राज्य बना था। सोवियत संघ का जो रुतबा था, वह दुनिया के सबसे बड़े देश रूस को हासिल हुआ। इस तरह अमेरिका स्वतः सोवियत संघ के बदले रूस का सबसे बड़ा विरोधी हो गया।

अमेरिका और रूस की दुश्मनी जग-जाहिर है। वो तो भला हो परमाणु बमों का जो कोई किसी पर हमला नहीं करता।

पर अपने मित्र देशों के सहारे ये एक-दूसरे पर दबाव बनाए रखना चाहते हैं। और यही वो कारण है जो यूक्रेन बर्बाद हो रहा है। अमेरिका और उसके मित्र देशों का संगठन है नाटो। अमेरिका चाहता है कि यूक्रेन उसमें शामिल हो जाए ताकि उसकी पहुंच रूस की सीमा तक हो जाए। नाटो में शामिल देश दुश्मन से मिलकर लड़ने का दावा करते हैं।

सब देशों के आमंत्रण पर यूक्रेन नाटो में शामिल होने की तैयारी करने लगा। अब रूस नाटो के बहाने अमेरिका को अपनी सीमा के पास मिसाइल और हवाई बेड़ा तैनात करते नहीं देखना चाहता था।

रूस ने यूक्रेन को डराने की कोशिश की। पर नाटो के सदस्य देशों और यूरोपियन संघ ने यूक्रेन को भरोसा दिलाया कि अगर रूस ने आक्रमण किया, तो हम सब मिलकर युद्ध लड़ेंगे।

पर ऐसा हुआ नहीं, हो भी नहीं सकता था। रूस के पास हथियारों को और परमाणु बमों का जखीरा है। उससे उलझकर विश्व को तीसरे विश्वयुद्ध की ओर धकेलने वाली बात होती।

अपने मित्र देशो की थोथी बातों में आकर यूक्रेन ने रूस को भाव नहीं

दिया, तो रूस ने पहले यूक्रेन के तीन टुकड़े किए। दो टुकड़ों पर विद्रोहियों की सरकार को मान्यता दी और फिर मेन यूक्रेन पर आक्रमण कर दिया।

यूक्रेन के राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की को उम्मीद थी कि आक्रमण होते ही अमेरिका और मित्र देश उसकी सहायता के लिए रूस पर धावा बोल देंगे। पर करनी और कथनी में अंतर होता है। सब देश निंदा युद्ध और प्रतिबंध युद्ध में लग गए पर किसी ने यूक्रेन की ओर से लड़ने के लिए सैन्य बल नहीं भेजा। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन ने तो साफ इनकार कर दिया। सब देशों के डरने का कारण था कि रूस ने खुली धमकी दी थी कि युद्ध को आगे बढ़ाया गया तो वह परमाणु बमों का इस्तेमाल करने से नहीं चूकेगा।

तो अब खेल यह है कि रूस अपनी मनमानी कर रहा है, किसी की बात सुनने को राजी नहीं है। यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर जेलेंस्की सबसे सहायता मांग मांगकर थक चुके, पर उन्हें अकेले लड़ने के लिए छोड़ दिया गया है। उसे उकसाने वाले देश बस किनारे खड़े होकर यह नारा लगाने में व्यस्त हैं कि, 'यूक्रेन तुम संघर्ष करो, हम तुम्हारे साथ हैं।'

अपनी खीझ मिटाने को रूस युद्ध के नियमों को ताक पर रखकर रिहायशी इलाकों और अस्पताल तक पर आक्रमण कर रहा है। रूसी राष्ट्रपकि पुतिन अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए किसी भी हद तक जाने को तैयार हैं।

मेडिकल की पढ़ाई के लिए रूस, यूक्रेन आदि देश भारत के बच्चों को बहुत पसंद है। एक तो भारत में पढ़ाई बहुत महंगी है और उस पर दाखिला भी मुश्किल से मिलता है। भारत से एक चौथाई खर्च पर वहां डॉक्टर बन जाते हैं। इस युद्ध के कारण भारत के लाखों बच्चे वहां फंस गए हैं। अब तक दो-चार बच्चे युद्ध की भेंट चढ़ चुके। आपरेशन गंगा के सहारे बच्चों को सरकार वापस भारत ला रही है। पर बच्चों की जान पर बनी है। युद्ध में भारत रूस का साथ नहीं दे रहा, तो उसकी आलोचना भी नहीं कर रहा। इसकी खीज अब यूक्रेनी सेना भारतीय बच्चों को परेशान करके निकाल रही है।

इस युद्ध से यह सीख जरूर मिली है कि किसी के उकसाने और भरोसे के आधार पर युद्ध में नहीं कूदना चाहिए। जब संघर्ष की बारी आती है, तो आपको ही करना पड़ता है। दुनिया दूर खड़े होकर तमाशा देखती है।

युद्ध से कमजोर होने वाले यूक्रेन का सब फायदा उठाना चाहेंगे, और भुगतेंगे यूक्रेन के निवासी। ❁

एटम बम

डॉ. अनुपमा गुप्ता

एटम बम पर बैठी दुनिया
डरती है छोटी सी मुनिया।
यदि एटम बम फ़ट जाएगा
दुनिया से सब हट जाएगा।
बड़े-बड़े जो बनते गुनिया
कहते थे 'बढ़ती है' दुनिया।
इससे अच्छी चुनिया-झुनिया
जिनकी है छोटी सी दुनिया।

अलविदा स्पिन के जादूगर शेन वॉर्न

4 मार्च 2022 को ऑस्ट्रेलिया के दिग्गज क्रिकेटर शेन वॉर्न का 52 साल की उम्र में निधन हो गया है। थाईलैंड में छुट्टियां बिताने के दौरान उन्हें दिल का दौरा पड़ा जिसके चलते अब वो हमारे बीच नहीं रहे।

शेन वॉर्न को क्रिकेट के इतिहास के सबसे महान गेंदबाजों में से एक माना जाता है। 13 सितंबर 1969 को ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न में शेन वॉर्न का जन्म हुआ। कमाल की बात यह रही कि तेज गेंदबाजी के लिए प्रसिद्ध ऑस्ट्रेलिया में उन्होंने स्पिनर बनने का निर्णय लिया।

1992 में शेन वॉर्न ने अपना पहला टेस्ट मैच खेला। भारत के खिलाफ उनका खराब प्रदर्शन रहा। उन्होंने करीब दो सौ रन देकर रवि शास्त्री का विकेट लिया था।

परंतु अगले दो सालों में शेन वॉर्न ने इतिहास को बदल दिया और लेग स्पिन गेंदबाजी को विश्व क्रिकेट में सम्मान दिलाया। आज जो हम राशिद खान, यजुवेंद्र चहल, आदिल राशिद या अन्य लेग स्पिन गेंदबाजों को क्रिकेट में सफल होते देख रहे हैं, उसके मूल में शेन वॉर्न की मेहनत ही है।

शेन वॉर्न बड़े मैचों के खिलाड़ी थे। ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच एशेज मैचों में उनका अलग ही रूप नजर आता था। 1996 के विश्वकप के सेमीफाइनल में उन्होंने वेस्ट इंडीज के विरुद्ध हारा हुआ मैच ऑस्ट्रेलिया को जिताया। श्रीलंका में श्रीलंका को हराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। फिर 1999 में ऑस्ट्रेलिया को विश्व कप जिताने में उनका मुख्य हाथ था। सेमीफाइनल और फाइनल में वह मैन आफ द मैच रहे।

यह क्रिकेट का सुनहरा दौर था कि हम एक ही समय में श्रीलंका के ऑफ स्पिनर मुथैया मुरलीधरन और लेग स्पिनर शेन वॉर्न को देख पाए। टेस्ट क्रिकेट में सर्वाधिक विकेट का रिकार्ड इन दोनों के बीच घूमता रहा और वॉर्न के रिटायर होने के समय उनके 708 विकेट टेस्ट क्रिकेट में किसी भी गेंदबाज द्वारा लिए गए सर्वाधिक विकेट थे, जिसे मुरलीधरन ने तोड़कर बाद में 800 विकेट तक पहुंचाया।

शेन वॉर्न का करियर मैदान के बाहर विवादों से ग्रस्त रहा। इनमें प्रतिबंधित पदार्थ के लिए सकारात्मक परीक्षण पाए जाने पर क्रिकेट से प्रतिबंध शामिल था। इसीलिए वह 2003 का विश्वकप नहीं खेल पाए थे।

शेन वॉर्न ने जनवरी 2007 में ऑस्ट्रेलिया की इंग्लैंड पर 5-0 की द एशेज की जीत के बाद अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट को अलविदा कह दिया। फिर 2008 में आईपीएल की टीम राजस्थान रॉयल्स के कोच और कप्तान की भूमिका निभाई और टीम को जीत दिलाई।

कुल मिलाकर उन्होंने 1992 से 2007 तक 145 टेस्ट मैच खेले थे जिसमें उन्होंने 25.41 की औसत से 708 विकेट लिए। 1993 से 2005 तक 194 एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय मैच में 293 विकेट लिए।

20 मार्च : विश्व गौरैया दिवस पर विशेष

अपने लेखक को जानिए

शिवचरण चौहान : बाल साहित्य की 3 पुस्तकें प्रकाशित। करीब 35 साल से बच्चों के लिए लेखन। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान सहित अनेक संस्थानों द्वारा पुरस्कृत और सम्मानित। एक मीडिया संस्थान में संपादक।

आई है गौरैया

सुबह सवेरे, दादी कहती
जागो किशन कन्हैया!
खाने को कुछ दाने दे दो
आई है गौरैया।।

खा कर दाने, पीकर पानी
ची ची चू चू, गाती।
अपने बच्चों को दुलराती
फिर उड़ना सिखलाती।

नन्हे दो बच्चों को अपने
लाई है गौरैया।।

बड़े सवेरे सूरज उगने से
पहले उठ जाती।
मंजन करती, कुल्ला करती
फिर मेरे घर आती।
खाना खा कर, गाना गा कर
फर फर फर उड़ जाती।।

दादा जी ने तीन घोंसले,
बनवाकर मंगवाए।
कहते, अच्छा है, गौरैया
घर में रहने आए।
नए घोंसले, आज देखने
आई है गौरैया।।

दबा चोंच में तिनके अपने
लाई है गौरैया।।

घर की रानी गौरैया बोले

तू जहां-जहां चलेगा, मेरा साया साथ होगा...

बच्चा जब पहली बार आंखें खोलता है, तो पक्षियों में सबसे पहले उसका परिचय या तो घर में पाले गए तोते या कबूतर से होता है या वह घर-आंगन में फुदकती गौरैया को पहली बार देखता है। घर की पाली हुई चिड़िया न होने पर भी सबसे घरेलू चिड़िया की जब भी बात होगी, तो सबसे पहले हमारे दिमाग और जुबान पर गौरैया का ही नाम आएगा। हमारे सबसे करीब रहने वाली जीव है गौरैया।

गौरैया को तुमने आमतौर पर पिंजरे में कैद नहीं देखा होगा। इसीलिए गौरैया को घरेलू पक्षी कहा जाता है। उसका अस्तित्त्व मानव से जुड़ा है। वह जंगल में या बीहड़ में रहना पसंद नहीं करती। वह मनुष्यों के आसपास रहना पसंद करती है। गांव हो या शहर, वह लोगों के घरों में छोटी-छोटी जगह देखकर उसमें अपना घर बनाती है। फिर मुर्गे की बांग के बदले गौरैया की चीं-चीं से घर के लोगों की आंखें खुलती हैं।

गौरैया की छह प्रजातिया पाई जाती हैं। यह ऐसी चिड़िया है, जो दुनिया के अधिकांश हिस्सों या महाद्वीप पर मिल जाती है। चूंकि यह जंगल और वीराने के मुकाबले घरों के आसपास घोंसला बनाकर रहना पसंद करती है, इसीलिए शायद इसे अंग्रेजी में हाऊस स्पैरो नाम दिया गया है।

नर-मादा को कैसे पहचानें

गौरैया बहुत छोटी चिड़िया है। मुश्किल से 6 इंच इसकी लंबाई होती है और इसका वजन 40 ग्राम से भी कम होता है। दूर से सभी एक सी लगती हैं। पर नर गौरैया के रंग बड़े चमकीले होते हैं। उनके शरीर के तीनों रंग-काला, सफेद और भूरा बहुत चमकीले होते हैं। इसके मुकाबले मादा गौरैया के रंग थोड़े फीके होते हैं।

क्या खाती हैं गौरैया

गौरैया चूंकि मनुष्य के आसपास रहना पसंद करती है, अतः उसका मुख्य भोजन अन्न के दाने हैं। गांवों में वह बालियों से दाने खाती हैं। कीड़े-मकोड़े भी इसके प्रिय आहारों में शामिल है। अब तो खाने की कमी के कारण यह अब और चीजें भी खाने लगी है।

कौन हैं दुश्मन

जैसे हर छोटे पक्षी के साथ होता है, गौरैया की भी सबसे बड़ा दुश्मन बिल्ली और शिकारी पक्षी हैं। इसके अलावा सांप तो हैं ही। पर हाल-फिलहाल उनका सबसे बड़ा दुश्मन हमेशा उन्हें आश्रय देने वाले मनुष्य जाति ही हो गया है।

सफाईकर्मी भी हैं गौरैया

गौरैया प्रकृति की ओर तैनात सफाई कर्मी है। वह घरों के आसपास झुंड में ही रहती है और अपना इलाका जल्दी नहीं छोड़ती। वहां घूमकर छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़े

खाकर अपना पेट पालती है। सांप छछूंदर या कोई और जीव गौरैया के आवास वाले घर की ओर आते हैं, तो यह चिल्ला चिल्लाकर सबको सावधान कर देती है।

मानव की दोस्त है यह

सुनने में आया है कि 1958 में चीन में चिड़ियों द्वारा फसलों को नुकसान पहुंचाने को लेकर वहां चिड़ियों को मारने का आदेश दिया गया। सबसे ज्यादा चिड़िया मारने वाले को पुरस्कार भी दिया जाता। कहते हैं कि करीब साल में ही चीन में चिड़ियां करीब-करीब समाप्त हो गईं। कीड़े-मकोड़ों को खाने वाली चिड़ियों के न रहने पर फसल में कीड़े लग गए और उस साल की फसल बबार्द हो गई। वहां भुखमरी वाली हालत हो गई।

भारत और गौरैया

भारत में दुनिया की सबसे ज्यादा गौरैया पाई जाती है क्योंकि भारत में घरों में गौरैया के रहने के लिए जगह छोड़ने का रिवाज रहा है। पहले के घरों में छत का साथ लगती दीवार पर रोशनदान बनाने का रिवाज था। उससे घर में रोशनी आती थी। एयर वेंटिलेशन का भी काम हो जाता था। ये रोशनदान गौरैया के लिए सुरक्षित घर बनते थे। यहां तक बिल्ली या किसी अन्य गौरैया के दुश्मन का पहुंचना नामुमकिन होता था।

लेकिन समय के साथ मनुष्य के घर सिकुड़ते गए। छोटे-छोटे घरों को साउंडप्रूफ और एयरप्रूफ बनाते हुए उनमें रोशनदान बनाना या कोई भी ऐसी जगह छोड़ने की प्रवृत्ति खत्म हो गई, जहां चिड़िया घोंसला बना सके।

घरों में जगह न मिलने पर मनुष्यों के पास रहने की ललक में गौरैया घरों के बाहर निवास बनाने को मजबूर हो गई, जिसने उसके जीवन को खतरे में डाल दिया। बाहर ठीक से खाना-पीना न मिलना, बिल्ली आदि के जद में आना उनके लिए विनाशकारी साबित हुआ। ऊपर से मोबाइल टावर की तरंगों ने इनका बहुत विनाश किया। हालत यह है कि शहरों में अब ये ज्यादा नहीं दिख रहे। कोई बड़ी बात नहीं, अगर अगले 15 वर्षों में गौरैया लुप्तप्राय पक्षियों की सूची में शामिल हो जाए।

विश्व गौरैया दिवस मनाने की शुरुआत 20 मार्च 2010 को हुई। वर्ष 2012 में दिल्ली सरकार ने इसे राज्य-पक्षी घोषित कर दिया। ❀

सलाम इन्हें

- उत्तराखंड के कोटद्वार में शिक्षक दिनेश कुकरेती बीस सालों से निरंतर गौरैया संरक्षण के लिए काम कर रहे हैं। अब तक वह 6000 से ऊपर घोंसलें बनाकर विभिन्न घरों, स्कूलों, सामाजिक आयोजनों और पहाड़ी गाँवों में लगा या बांट चुके है।
- नासिक निवासी मोहम्मद दिलावर ने घरेलू गौरैया पक्षियों की सहायता हेतु 'नेचर फोरेवर सोसाइटी' की स्थापना की थी। इनके इस कार्य को देखते हुए टाइम मैगजीन ने 2008 में इन्हें 'हीरो ऑफ दी एनवायरमेंट' नाम दिया था। 'विश्व गौरैया दिवस' मनाने की योजना भी इन्हीं के कार्यालय में एक सामान्य चर्चा के दौरान बनी थी।
- शाहजहांपुर में कॉलेज के शिक्षक डॉ. मोहम्मद साजिद खान अपने व्यस्त समय में से कुछ पल पक्षियों के लिए निकालते हैं। वह खुद अपने हाथों से

गौरैया और अन्य पक्षियों के लिए घर बनाकर लगाते हैं।

ऐसे प्रयासों की ही जरूरत है, दुनिया के सबसे खूबसूरत प्राणी चिड़ियों को बचाने के लिए।

अनोखा होली उत्सव

कोरोना वायरस के समय में बच्चों को घर से बाहर निकलने की छूट नहीं थी। घरवालों को हर पल अपने बच्चों के स्वास्थ्य की चिंता में रहती थी। सभी पूरी तरह से अपने बच्चों को स्वस्थ और सुरक्षित रखना चाहते थे।

राजनपुर मुहल्ले में अड़तीस लोगों का परिवार रहता था। ज्यादा लोग रिटायरमेंट के बाद यहां अपना घर बनाकर रहते थे। सब लोगों में काफी मिल्लत थी। किसी भी परिस्थिति में मुहल्ले वाले अपने को अलग-थलग नहीं देखना चाहते थे।

होली पर घर के अभिभावकों के द्वारा यही तैयारी की जा रही थी कि कोई भी बच्चा घर से बाहर नहीं निकलने पाए। सबों को डर सता रही थी कि कहीं उनके बच्चे कोरोना से संक्रमित न हो जाए।

मुहल्ले में राजू, निश्चल, शेखर, करीम, डेविड, प्रदीप, तरूण, नंदलाल और सुखवीर को भी डर था कि इस वर्ष फिर 2020 की भांति होली पर वे कोई मौज-मस्ती नहीं कर पाएंगे।

मुहल्ले के सभी हम उम्र लड़कों ने गुपचुप तरीके से छिप-छिपाकर होली उत्सव मनाने की योजना बनाई। शेखर ने कहा, "तो बतला राजू, तुम्हारे पास कौन सी है योजना है ?"

"अरे भाई बतलाता हूं न, क्यों इतनी जिद करते हो।"

राजू बोला, "हमारे माता-पिता को रंग से परहेज है न, तो क्यों नहीं हम सब इस बार फूलों से होली खेलें ?"

फूलों से होली खेलने के राजू के प्रस्ताव को सभी मित्रों ने खुशी से स्वीकार कर लिया।

फिर क्या था, फूलों को जमा करने की तैयारी व नर्सरी से फूलों को जमा करने के लिए दो-दो मित्रों की टोली बनीं।

मुहल्ले के कम्यूनिटी सेंटर के हाल में हर वर्ष की भांति तैयारी में मुहल्ले के बच्चे लग गए। सब तैयारी राजू के नेतृत्व में किया जा रहा था।

नर्सरी वाले रहमान चाचा और सुंदर अंकल ने बच्चों के द्वारा जमा किए थोड़े से पैसे से ही फूलों की होली उत्सव के लिए रंग-बिरंगे फूलों को देने के लिए तैयार हो गए।

होलिका दहन के एक दिन पूर्व मुहल्ले के कम्यूनिटी सेंटर के सचिव मदन गोयल साहब और अध्यक्ष प्रदीप शाक्य से मिलकर मुहल्ले के सभी बच्चों ने मुहल्ले के सभी अभिभावकों को फूलों की होली उत्सव में भाग लेने के लिए तैयार करने का अनुरोध किया गया। बच्चों के अनुरोध पर उन्होंने अपनी सहमति दे दी।

अब तो राजू और उनकी टीम के साथियों के पैर खुशी से जमीन पर नहीं पड़ रहे थे। उन्हें विश्वास था कि मुहल्ले वालों को उनके द्वारा आयोजित अनोखी होली उत्सव पर खूब मजा आएगा।

उधर निश्छल और डेविड ने निमंत्रण पत्र भी तैयार कर लिया था। अब बुजुर्गों को तैयार करने की जिम्मेदारी कम्यूनिटी सेंटर के सचिव और अध्यक्ष पर रह गई थी।

दोनों बुजुर्गों के समझाने पर पूरे राजनपुर मुहल्ले वाले होली उत्सव में शामिल होने के लिए तैयार हो गए।

गोयल साहब और शाक्य अंकल ने मुहल्ले वालों से स्पष्ट कर दिया था कि होली उत्सव में रंगों की होली नहीं होगी और न ही रंग के सूखे अबीर से ही कम्यूनिटी सेंटर में आयोजित उत्सव में होली का त्योहार मनाने की कोई योजना बनी है।

सभी मुहल्ले वाले अब आश्वस्त हो गए थे कि कोरोना काल में होली उत्सव में भाग लेने वाले सभी मुहल्ले वाले लोगों को कोरोना प्रोटोकॉल का भी अनुपालन करना ही होगा।

निर्धारित समय पर कम्यूनिटी सेंटर पर सब आने लगे। राजू ने कम्यूनिटी सेंटर के उत्सव हॉल में चारों तरफ अपने मित्रों की मदद से दूर-दूर आवश्यक दूरी बनाए रखने के लिए लोगों के बैठने की व्यवस्था की थी।

इसके लिए हर पांच-पांच गज की दूरी पर एक बड़ी बांस की डलिया को फूलों से लबालब कर रख दिया गया था।

यह सब कुछ रहमान चाचा और सुंदर अंकल की मेहरबानी थी। राजू ने होली उत्सव को यादगार बनाने के लिए स्थानीय गुल्लू और टीम की प्रसिद्ध आर्केस्ट्रा टीम भी बुलाया था।

शाम के समय मुहल्ले के लोगों का कम्यूनिटी सेंटर पर होली उत्सव के कार्यक्रम में भाग लेने हेतु जुटान शुरू होने लगी।

मुख्य अतिथि ने कोरोना वायरस युग में राजू और उनके मित्रों के द्वारा फूलों से मनोरंजन युक्त होली उत्सव के बारे में आगंतुकों को जानकारी दी। फिर फूलों से होली खेलने की बातें बताईं।

गोयल साहब के निर्देश पर सभी लोग कम्यूनिटी सेंटर के हर कोने में टोकरी में रखी गईं रंग-बिरंगे फूलों से रंग की तरह फूलों से एक दूसरे पर बौछार करने लगे।

पूरे कम्यूनिटी सेंटर में एकत्रित हुए मुहल्ले के लोगों ने ऐसी होली पहले कभी नहीं खेली थी।

पूरे मुहल्ले वाले बस राजू और उसकी टीम को इस फूलों की अनोखी होली की प्रशंसा करते हुए थकते नहीं दिख रहे थे।

पूरे एक साल के बाद यह फूलों की अनोखी होली खेलने का मौका मुहल्ले वालों को मौका मिला था!

फिर डेविड और प्रदीप के इशारे पर आर्केस्ट्रा टीम भी संगीत प्रस्तुत करने लगी। इसके बाद राजू की टीम ने पहले से रिहर्सल कर बड़ी मजबूती से तैयार भांगड़ा नृत्य पेश किया।

जब नर्सरी वाले रहमान चाचा और सुंदर अंकल आए, तो राजू ने दोनों का स्वागत करते हुए मुहल्ले के सभी लोगों से पर्यावरण वारियर्स के रूप में दोनों का परिचय कराया।

सिर और पहने हुए नए-नए वस्त्रों पर फूलों की बारिश देख लोग खूब उत्साहित दिख रहे थे। यह फूलों की होली का मंजर देखते ही बन रहा था। कोई प्रदूषण नहीं, कोई संक्रमण का खतरा नहीं।

फिर लोगों की फरमाइश पर और बच्चों की जिद पर आर्केस्ट्रा की टीम ने बुजुर्ग महिला-पुरुष के संग ऐसी धूम मचाई कि पूरी मोहल्ले में होली उत्सव की गूंज उठने लगी।

चार घंटे के इस फूलों संग खेली गई होली उत्सव के बाद राजू अपने मुहल्ले का होली हीरो बन गया। ❀

अपने लेखक को जानिए

डॉ. अशोक : पूरा नाम डॉ. अशोक कुमार शर्मा। एक सेवा निवृत्त पदाधिकारी। साहित्य बहुत पसंद है। लेख, कविता और लघुकथाएं लिखते हैं। बच्चों के लिए लिखना बेहद पसंद है।

अपने लेखक को जानिए

डॉ. देशबन्धु शाहजहांपुरी : 9 बाल कहानी और 2 बाल कविता संग्रह प्रकाशित। 30 से अधिक संकलन और पाठ्य पुस्तक में रचनाएं संकलित। चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट द्वारा 4 पुरस्कार से सम्मानित।

ठीक नहीं...

रंगों से भरकर पिचकारी,
धार मारना मन भाता।
करके कुछ मसखरी, शरारत,
हर चेहरा खिल-खिल जाता।
कींचड़,गोबर फेंक-फेंककर,
कष्ट बढ़ाना ठीक नहीं।

द्वार-द्वार जा कर के टोली,
उपले या लकड़ी मांगे।
करे इकट्ठा हर घर से कुछ,
भाव एकता का जागे।
बड़ी होलिका बने, इसलिए,
पेड़ काटना ठीक नहीं।

यदि कोई बीमार,वृद्धजन,
आता या फिर जाता हो।
बने सहायक, रोके उनको,
कोई अगर सताता हो।
होली में जबरन ही सबको,
रंग लगाना ठीक नहीं।

बिन उनके खेलूँ क्या होली

चिड़ियाँ चूँ-चूँ कर यों बोली
बिगड़ गई है क्यों रंगोली।

दाना लेकर जब आई मैं
पड़ी यहाँ क्यों खाली खोली।

बच्चे मेरे कहाँ गए हैं
कहाँ गए मेरे हमजोली।

जोर-जोर से बोली रोकर
कौन करेगा यहां ठिठोली।

जब भी बाहर से आती मैं
बच्चे पकड़ें मेरी चोली।

झर-झर आँखें बरसें उसकी
साँपों की देखी जो टोली।

समझ गई 'राजन' से बोली
बिन उनके खेलूँ क्या होली।

अपने लेखक को जानिए

राजकुमार जैन राजन : राजस्थान के बहुमुखी प्रतिभा के रचनाकार हैं जिनकी हजारों रचनाएं देश-विदेश की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होने के साथ ही 40 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है।

ईल्ली और नानी (उपन्यास) धारावाहिक के रूप में

इल्ली और एनाफिलीज सिस्टर

पिछले अंक में आपने पढ़ा : एक नन्ही मक्खी ईल्ली की मां कीटाणुओं की व्यापारिन थी। एक बार मां के न रहने पर व्यापार करने इल्ली अपनी नानी के पास गई। नानी उसे देखकर खूब खुश हुईं। वह ईल्ली को व्यापार के गुण सिखाने लगीं। नानी उसे वहां-वहां ले गई, जहां व्यापार की खूब संभावना थी। ईल्ली को खूब मजा आया। अब आगे...

"वाह! नानी, तुम्हारे यहां तो कीटाणु व्यापार की काफी संभावनाएं है।" ईल्ली खुशी से बोली।

इतने में पीछे से गूं-गूं की सुरीली आवाज आई। ईल्ली चौंकी।

"नमस्ते रानी मक्खी। यह कौन मेहमान साथ लाई हो?"

"मेहमान नहीं, मेरी बेटी की बेटी है एनाफिलीज सिस्टर।"

एनाफिलीज नाम सुनकर ईल्ली को आश्चर्य हुआ।

"यह कोई विदेशी नागरिक है?" ईल्ली ने पूछा।

"नहीं बेटी, इसका सिर्फ नाम ही विदेशी है। इसके माता-पिता ने रख दिया, जो चल रहा है। रहती यह हमारे देश में ही है। इसका और हमारा धंधा एक ही है।"

"धंधा एक ही है, क्या मतलब?"

"बस फर्क इतना है कि हम कई तरह के कीटाणुओं का व्यापार मौसम के अनुसार करती हैं किंतु एनाफिलीज मच्छर केवल एक ही तरह के कीटाणुओं की व्यापारिन है। बरसात के मौसम में इसका धंधा जोरों पर चलता है।

इसके पास एक ही कीटाणु है 'मलेरिया पैरेसाईट'। बस उसी को पेट में लिए घूमती है।"

"पेट में नानी?"

हां-हां पेट में। इसके अमाशय में कीटाणु अपना आधा जीवन पूरा करते हैं। फिर मनुष्यों तक पहुंचाने के लिए इसे उन्हें काटना पड़ता है। बड़े जोखिम का काम है। कई बार बेचारी काटते वक्त पकड़ी जाती है। इसके कुछ चालाक साथी तो उड़ जाते हैं और कुछ बचारे बेमौत मारे जाते है।"

"बहन, एनाफिलीज कोई और तरीका क्यों नहीं ढूंढ़ लेती तुम कीटाणु पहुंचाने का।" ईल्ली ने एनाफिलीज से कहा।

"कीटाणु मुझे मनुष्य के खून में पहुंचाने होते है। जो सिर्फ मेरे मुंह से लार द्वारा ही जा सकते है। इसके लिए पहले मनुष्य की त्वचा को भेदना होता है। फिर हमारा भोजन भी मनुष्य का खून ही है। खून चूसने के साथ ही हम अपनी लार के जरिए कीटाणु छोड़ देती है।"

"तुम्हारे धंधे में बहुत खतरा है।" ईल्ली बोली।

एनाफिलीज कहने लगी, "टी.वी. नहीं देखती तुम? रोज नित नए डाकुओं के विज्ञापन मेरे विनाश के लिए निकलते रहते है। कभी ये लगाओ, कभी वो लगाओ। कभी ये जलाओ, कभी वो जलाओ। ऐसे भगाओ वैसे भगाओ। जाने कितनी तरह की मुसीबतें हमें अकेले झेलनी पड़ती हैं।"

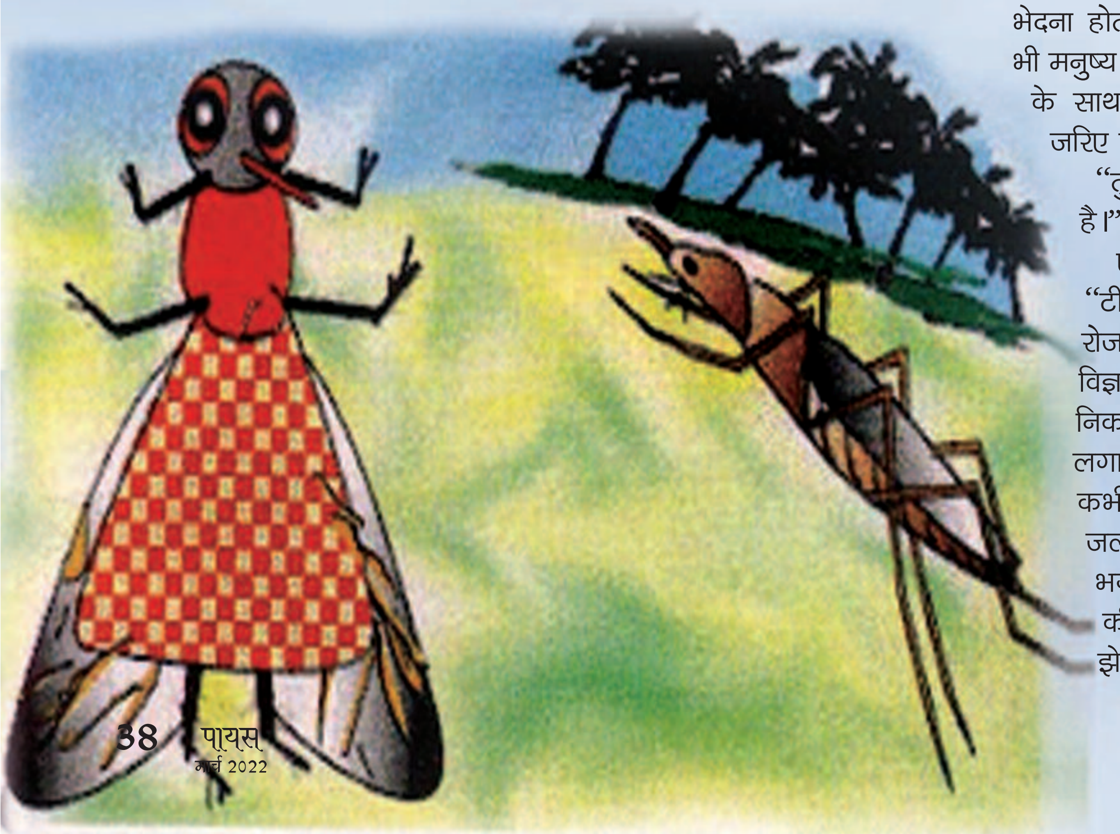

"अकेले क्यों बहन? क्या तुम्हारे घर के मर्द काम नहीं करते?"

"अरे नहीं, हमारे मर्द न काम के न काज के, दुश्मन अनाज के। सारे दिन फूलों और फलों का रस चूसते रहते हैं। सिर्फ अपना पेट भरने का काम करते हैं। पेटू कहीं के, कभी-कभी हमें भी फंसा देते हैं।

एक हम मादा एनाफिलीज ही हैं जो बच्चों की तरह कीटाणुओं को पेट में पालती भी हैं और धंधा भी करती हैं।"

"इनके व्यापार की एक खास बात जानती हो ईल्ली?" इतनी देर से चुप बैठी नानी बोलीं।

"वो क्या नानी?"

एक बार जो यह एनाफिलीज बहन एक स्वस्थ आदमी को काट ले और अपने कीटाणु जिसे ये प्लाज्मोडियम कहती हैं, मलेरिया फैलाने में कामयाब हो जाएं तो इसकी अन्य साथिन बहनें उसी बीमार आदमी का खून चूसकर वापस कई कीटाणुओं को अपने पेट में भर लाती हैं। फिर इसके आमाशय की दीवारों में वे कीटाणु अपना आधा जीवन चक्र पूरा करते हैं।"

"क्या मतलब नानी?"

"मतलब यह कि इसके कीटाणु आधा जीवन चक्र मनुष्य के शरीर में और आधा जीवन चक्र इसके शरीर में पूरा करते हैं।"

"सचमुच आश्चर्यजनक है इनकी व्यापार शैली।"

"हां ईल्ली, नानी ठीक कह रही हैं। हमारी जाति के और भी मच्छर होते है जो दूसरी तरह के कीटाणुओं के व्यापारी हैं।"

"कौन-कौन है? जरा, मुझे भी बताना।" ईल्ली ने कौतूहल से पूछा।

"क्यूलेक्स और एडीस।"

"क्या सभी मच्छरों के नाम अंग्रेजी में होते है?" ईल्ली ने पूछा।

"हां, वैज्ञानिकों ने रख दिए हैं। "वैसे नाम से क्या फर्क पड़ता है अंग्रेजी के हों या हिंदी के, हमें तो अपने व्यापार से मतलब। क्यूलेक्स मच्छर, डेंगू ज्वर और फीलपांव के कीटाणुओं का व्यापारी हैं। एडीस के पास पीत ज्वर के कीटाणु मिलते हैं।

"तुम रहती कहां हो?"

"वो वहां दूर दलदल में। दरअसल मुझे नम जगह बेहद पसंद है। वहां मुझे अंडे देने में सुविधा भी रहती है। अब तुम ही देखो न! मैं एक बार में करीबन दो सौ से लेकर चार सौ तक अंडे देकर निश्चित हो जाती हूं। फिर यही दलदल उन्हें पालता है। यहीं मेरे अंडो में से लार्वा निकलता है और लार्वा से प्यूपा बनता है। मुझे उन्हें संभालने नहीं पड़ते।

अब तुम ही बताओ बहन, व्यापार करूं या बच्चे संभालू?" एनाफिलीज अपनी स्कर्ट ठीक करती हुई आगे बोली, "अच्छा अब चलती हूं। कहीं दुश्मनों ने देख लिया तो पकड़कर मसल ही डालेंगे।"

रचनाकार को जानिए

डॉ. विमला भंडारी : केंद्रीय साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से बाल साहित्य में पुरस्कृत, राजस्थान की जानी-पहचानी बाल साहित्यकार। अपनी साहित्यिक गतिविधियों के लिए ख्याति प्राप्त सलिला संस्था, सलूम्बर की वह संस्थापक अध्यक्ष हैं। अनेक आलेख व कहानियां विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित।

"अच्छा! अलविदा बहन फिर कभी मिलेंगे।" कहकर वे जुदा हो गईं।

ईल्ली को आज मच्छर जाति के बारे में रोचक बातें जानने को मिलीं। सोच रही थी कि घर जाकर उन्हें जल्दी से डायरी में उतार ले। अतः उसने नानी से घर चलने का अनुरोध किया और दोनों घर की ओर उड़ चलीं।

रात को नानी तो सो गईं पर ईल्ली लैम्प की मद्धिम रोशनी में आज की डायरी लिखने में व्यस्त हो गई। इस बीच वह कब सो गई, उसे पता ही नहीं चला।

सुबह नानी ने ईल्ली को उठाया और उसके सामने नक्शा फैलाते हुए कहने लगीं, "देखो ईल्ली, यह हरे निशान वाली जगहों पर हमें अपने कीटाणुओं की बस्ती बसानी है ताकि उनकी आबादी बढ़ाई जा सके। खतरों वाली सारी जगहों को मैंने लाल घेरे में ले लिया है। ये वो निशान हैं जहां हमारे ऐजेंट काली वर्दी में तैनात रहेंगे। अच्छा अब हम चलते हैं, मैंने आज का दिन अंडे देने के लिए चुना है...।"

अगले अंक में जारी...

अपने लेखक को जानिए

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव 'कोमल': प्रकाशित कृतियां : तीन बाल गीत/कविता संग्रह प्रकाशित। सम्मान एवं पुरस्कार : भारतीय बाल कल्याण संस्थान कानपुर, मध्य भारतीय हिन्दी साहित्य सभा, ग्वालियर सहित अनेक संस्थानों से पुरष्कृत एवं सम्मानित। अनेक रचनाएं पाठ्यक्रम में सम्मिलित

रंग पर्व

रंग पर्व आ गया,
बस धमाल हो गया।

अंग-अंग है उमंग,
रंग-रंग हो गया।
हवा बही वसंत की,
मन पतंग हो गया।
दृष्टि डालिये जहाँ
लाल-लाल हो गया।

छोड़ती पिचकारियाँ,
रंग की बौछार सी।
लग रही मनभावनी,
प्रेम की रसधार सी ।
रंग के त्योहार में,
क्या कमाल हो गया।

तितलियों के पंख भी,
रंग से सँवर गए ।
खेत बाग बन सघन,
रंग नव बिखर गए।
आँख तो हरी हुईं
मन गुलाल हो गया।

खूब मनाएँ मिलकर होली

भर-भर हाथों में गुलाल लो
आई है बच्चों की टोली।
तरह-तरह के रंग लगाकर
खूब मनाएँगे ये होली।

भर-भर पिचकारी बरसाई
जैसे वर्षा झर-झर आई।
मटक-मटककर गुड़िया बोली
बुरा न मानो है जी होली।

लाकर चुपके से गुब्बारा
मुनिया ने भैया को मारा।
कहा बनाके सूरत भोली
बुरा न मानो है जी होली।

जब देखी गुजिया की थाली
गुलगुल भूला नफ़रत सारी
भर ली उसने पूरी झोली
बुरा न मानो है जी होली।

इंद्रधनुष से लगते गाल
और गीले हैं सबके बाल
गूंज रही है हंसी- ठिठोली
खूब मनाएँ मिलकर होली।

रचनाकार को जानिए

दिशा ग्रोवर : कंप्यूटर इंजीनियर। बाल कविता, बाल नाटक और कहानियां लिखने में रुचि। 'प्रतिनिधि बाल कविता संचयन' (साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली) सहित अनेक पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित।

कुआं धकेल गांव

बादशाह अकबर के जमाने में पीने के पानी की बड़ी किल्लत रहा करती थी। कई गांवों के बीच एकाध कुएं या तालाब हुआ करते थे। मेरे जमींदार नाना ने उन दिनों अपने गांव में एक नया कुआं खुदवाया था, जिसमें काफी लोग पानी भरा करते थे।

सर्दियों के दिनों तक तो सब ठीक रहा, लेकिन गरमी आते ही कुएं का मिजाज कुछ बदल सा गया था। गांव की चौपाल में एक दिन भडकू नामक व्यक्ति ने शिकायत की, "कुएं का पानी दिन में ठंडा नहीं रहता। दोपहर तक कुएं के पानी गरम हो जाता है।"

यह सुनकर सारे लोग चिंतित हो उठे कि इतनी विकट समस्या कहां से आ गई? बस, बहस शुरू हो गई, कोई इसे दैवी आपदा बताने लगा, तो कोई धरती के अंदर गरमी बढ़ने की जानकारी देने लगा। कुछ ने तो यहां तक कह दिया कि यह कुआं ही उद्दंड हो गया है, इसे उठाकर किसी के घर में या तहखाने में ठंडी जगह पर बंद करके रख देना चाहिए। सजा से इसका दिमाग ठंडा हो जाएगा, तो खुद ही ठंडा पानी देना शुरू कर देगा।

"वाह-वाह, क्या विचार है...?" लोगों ने तालियां पीट डालीं कि यही ठीक रहेगा।

लेकिन इसपर एक नई बहस छिड़ गई कि कुएं को ऐसी जगह उठाकर रखा कैसे जाए? यह तो उस समस्या से भी बड़ी समस्या खड़ी हो गई थी। आखिर कुआं कोई एक घड़ा भर पानी तो था नहीं कि जहां मर्जी होती, वहां रख देते।

फिर से संसद जैसा घमासान शुरू हो गया। विरोधी लोगों ने मूल समस्या से हटकर पहली सलाह देने वाले पर चौपाल का समय बरबाद करने के लिए कार्यवाही की मांग कर डाली। कुछ लोग इस मांग के भी विरोध में खड़े हो गए।

आरोप-प्रत्यारोप का दौर चल निकला। सब अपनी ढपली अपना राग बजाने के चक्कर में पड़े थे। जब कोई किसी एक की बात पर सहमत न दिखा, तो माहौल और गरमा गया।

लोगों ने जूते-चप्पल फेंककर मारना शुरू कर दिया। लोग जान बचाकर भागने लगे।

शिकायत कर्ता की पहल पर अगले दिन फिर ग्रामवासी उसी चौपाल पर इकट्ठा हुए। बड़े बुजुर्गों ने सलाह दी, "कल जैसी बहस करने के बजाय हमें पहले मौके पर जाकर देख लेना चाहिए। शायद कोई बढ़िया हल वहीं सूझ जाए।"

"हां, ये ठीक रहेगा।" कल जैसी बहस वास्तव में कोई नहीं चाहता था आखिरकार सभी लोग उस कुएं के पास जा पहुंचे।

समस्या स्थल का बारीकी से निरीक्षण किया गया। कुएं से थोड़ी दूर पूरब और पश्चिम दिशा में नीम का एक-एक पेड़ था। ये काफी बड़े और घने पेड़ थे, जिनकी छाया सूरज की चाल के हिसाब से कुएं पर पड़ती थी। गांव के लोग बुद्धिमान तो थे ही, दिन भर की जांच-पड़ताल के बाद कुछ अनपढ़ इंजीनियर टाइप के लोगों ने जल्द ही समस्या की जड़ पकड़ ली और उसका समाधान भी खोज लिया गया। खोजबीन में पाया गया कि धूप चढ़ने के साथ ही सूरज की गरमी बढ़ने से कुएं का पानी गरम हो जाता है। तब समाधान खोजा गया, "जब धूप चढ़ने लगे, तो कुएं को ठेल-धकेलकर छाया में कर दिया जाए, इससे कुएं का पानी गरम होना बंद हो जाएगा।"

अब यह निश्चित हो गया कि कुएं को धकेलकर छाया में कर दिया जाए। इसके लिए सारे गांव वालों ने श्रमदान का निश्चय किया।

अगले दिन सूरज के सिर पर चढ़ते ही लोग इकट्ठे होकर कुएं को छाया में धकेलने का प्रयास करने लगे। पूरब की दिशा से सारे गांव वाले धक्का लगाने में जुट गए। धूप बढ़ती गई, लोग जोर लगाते गए। जोश बढ़ाने वाले नारों से लोग एक-दूसरे के पीछे जुड़ते गए। ताकत बढ़ती गई, जिसने भी सुना कि कुएं को ठंडा रखने के लिए छाया में खिसकाया जा रहा है, वह भी दौड़ा चला आया। लोग आते गए, कारवां बनता गया और धक्का लगता गया। सैकड़ों लोग, स्त्रियां और बच्चे जुट गए। बड़ी मेहनत लगी। लेकिन कुआं अपनी जगह से न खिसकना था न ही खिसका। दोपहर ढलने लगी, आखिरकार सूरज डूबने को

रचनाकार को जानिए

अरविंद कुमार 'साहू' : 16 पुस्तकें व 500 से अधिक रचनाएं प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। अपूर्व उड़ान, मधुर सरस एवं जागरण जंक्शन समेत कई पत्र-पत्रिकाओं के संपादक रहे।

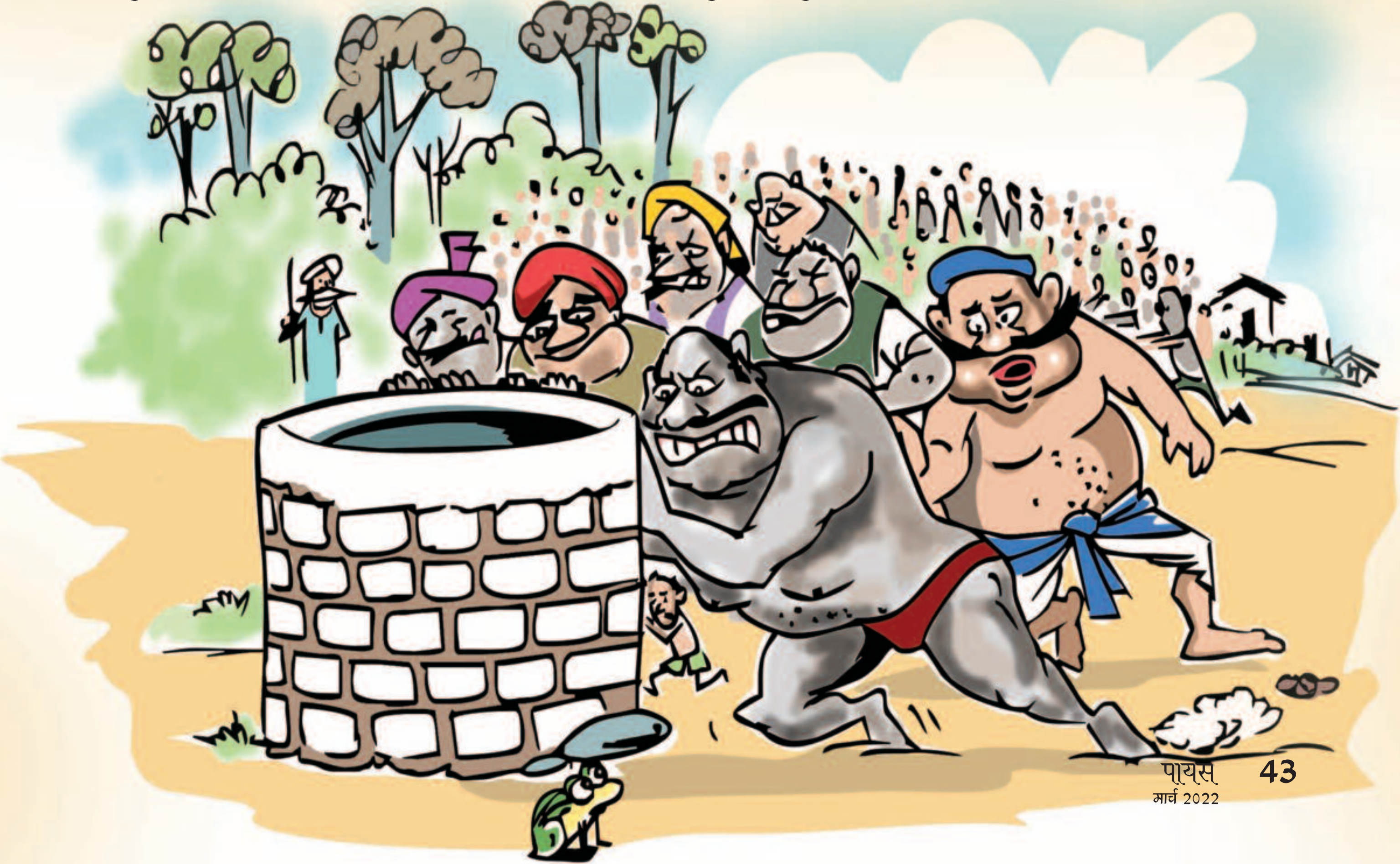

आया। तभी एक बुजुर्ग ने बड़ी प्रसन्नता से घोषणा कर दी, "हम कामयाब हुए। कुआं ठंडी जगह पर आ चुका है।"

सबने आश्चर्य से देखा, अब वहां पश्चिम में ढलते सूरज के कारण पेड़ की भरपूर परछाईं आ चुकी थी। सचमुच कुआं ठंडी जगह पर पहुंच गया था। परख के लिए बालटी से पानी भरकर देखा गया। सचमुच पानी ठंडा हो चुका था। लोगों की खुशियों का ठिकाना न रहा। खूब जश्न मनाया गया।

रात बीती। फिर नई सुबह हुई, तो लोग फिर पानी भरने कुएं पर आने लगे। पानी भरते गए, धूप भी चढ़ती गई। अचानक कोई चिल्लाया, "अरे कुएं का पानी तो फिर गरम हो रहा है। लगता है थोड़ा और खिसकाना पड़ेगा।"

उत्साही लोगों ने कहा, "कोई बात नहीं, हम आज फिर इसे खिसकाकर छाया में कर देंगे।"

लोग फिर जुट गए। शाम ढलने से पहले फिर कुएं को ठंडी जगह पर खिसकाकर ही माने। सभी खुश थे।

अगली धूप चढ़ते ही फिर वही समस्या। पर अब गांव वाले निराश नहीं थे। उन्हें तरकीब मिल गई थी। कुएं को उसी प्रकार शाम ढलने से पहले फिर खिसका लिया गया। अजीब बात थी अगले दिन फिर वही समस्या, मानो कुआं रात में अपनी जगह खिसककर लौट आता था।

धीरे-धीरे यह रोज की समस्या हो गई, तो लोगों के लिए वही तरीका रोज का समाधान भी बन गया। आखिरकार, एक समिति ही बना दी गई, जिसको इस व्यवस्था का जिम्मा दे दिया गया। वह धूप चढ़ते ही कुएं को धक्का लगाते और शाम ढलने तक जब कुआं ठंडी जगह में पहुंच जाता, तभी मानते।

यह बात जंगल की आग की तरह फैलने लगी। लोग दूर-दूर से यह कारनामा देखने के लिए आने लगे। यह खबर बादशाह अकबर तक भी पहुंच गई। फटाफट राजा बीरबल को मुआयना करने के लिए भेजा गया।

राजा बीरबल ने सारी घटना की जांच की, तो अपना माथा पीट लिया। दरअसल वहां के लोग समझते थे कि कुएं के पूरब की ओर से सूरज निकलने पर नीम के पेड़ की परछाई थोड़ी देर तक ही कुएं पर रह पाती थी दोपहर में सूरज की सीधी किरणों से सतह का पानी गर्म हो जाता था। किंतु जब तक ग्रामीण उसे धक्का लगाकर ठंडी जगह में ले जाते थे सूरज पश्चिम दिशा में पहुंच जाता था और ऐसे में सूरज की सीधी किरणें कुएं में न पड़ने से पानी सचमुच ठंडा हो जाता था और परछाई में पहुंचकर गांव वालों को विश्वास हो जाता था कि उन्होंने कुएं को ठंडी जगह पर खिसका लिया है।

सब कुछ जानकर बादशाह अकबर भी खूब हंसे, "बोले ऐसे मूर्ख गांव वालों को सम्मानित करना तो वाकई बनता है, बीरबल! गांव जाओ, और उस कुएं के चारों तरफ छायादार वृक्ष लगवा दो, ताकि हमेशा कुएं का पानी ठंडा बना रहे।"

"जी हुजूर, आज्ञा का पालन किया जाएगा। लेकिन एक मेरी भी इच्छा है कि इस गांव का नाम जो भी है, उसे बदल कर 'भकुआ' रख दिया जाए, ताकि यह गाथा युगों तक के लिए अमर रहे।"

"भकुआ?" ये भकुआ क्या होता है?" बादशाह भी अचकचा उठे। इस शब्द का क्या मतलब है बीरबल?"

"आला दर्जे के बेवकूफ हुजूर।" सारा दरबार ठहाकों से गूंज उठा। ❀

पुस्तक परिचय

पुस्तक : आदी पादी दादी
लेखक : समीर गांगुली
प्रकाशक : साहित्य विमर्श प्रकाशन, गुरुग्राम, हरियाणा
ई मेल : contact@sahityavimarsh.in
मूल्य : 109 रुपए

'आदी पादी दादी' का नाम सुनकर एक बार मुझे बड़ा अजीब लगा क्योंकि हम भारतीय पाद के विषय में बात भी नहीं करना चाहते हैं, क्योंकि हम इसे एक शर्मसार करने वाली बात मानते हैं।

लेकिन समीर जी ने इस घटना को एक कहानी में पिरोते हुए इतनी मजेदार कहानी लिखी कि वह उनकी किताब का शीर्षक भी बन गया। यह कहानी अपने आप में एक पहल है।

पहली बार किसी ने महिला पात्रों को लेकर ही किताब की सारी कहानियां लिखी हैं। समीर जी के लेखक का कमाल है कि उन्होंने महिला पात्रों को लेकर छोटी-छोटी घटनाओं को इस तरीके से कहानी का रूप दिया है कि कहानी शुरू करने के बाद बिना खत्म किए हुए उठने का मन नहीं करता।

इस पुस्तक में छोटी-छोटी कहानियां हैं। पढ़ने में इतना रस आता है कि कहानी कब खत्म हो गई, पता ही नहीं चलता। हां, कहानी खत्म होने के बाद चेहरे पर आने वाली दबी हुई मुस्कान निश्चय ही यह घोषणा करने के लिए काफी है कि कहानी दिल को छू गई है।

ऐसा नहीं है कि सारी कहानियां चुपके से उपदेश देने के लिए हैं। कुछ विशुद्ध मनोरंजक कहानिया भी है, जिनमें फंतासी भी है और विज्ञान भी। हर बच्चा इनसे खुद को रिलेट कर सकता है।

इस पुस्तक की सारी कहानियां 8 साल तक के बच्चों के लिए है, जो खूब रस के साथ खिलखिलाते हुए इन कहानियों को पढ़ने का आनंद लेंगे।

समीर जी की भाषा के क्या कहने! दशकों का अनुभव उन्हें बच्चों के लिए सरल शब्दों का चयन करने की सुविधा देता है। बच्चे पढ़ते समय कहीं अटकते नहीं हैं। मेरी नजर में यह पुस्तक एक ब्लाकबस्टर है।

पुस्तक : जादुई बगीचा
लेखिका : उषा सोमानी
प्रकाशक : सहित्यागार, जयपुर
फोन : 0141-2310785
ईमेल : sahityagar@gmail.com
मूल्य : 200 रुपए

उषा जी ने देर से साहित्य लिखना शुरू किया लेकिन उनकी लेखनी की गाड़ी पैसेंजर ट्रेन की तरह नहीं, राजधानी एक्सप्रेस की तरह चली। वह बच्चों को पढ़ाती हैं इसलिए बाल मनोविज्ञान को समझती है। इसीलिए उनकी कहानियों में पात्र या घटनाएं सत्य प्रतीत होते हैं।

उनकी पुस्तक जादुई बगीचा में 23 कहानियां हैं और सारी कहानियां एक से बढ़कर एक हैं। पहली कहानी 'गुम हो गई जुगनू की चमक' किताब का ट्रेंड सेट कर देती है यह कहानी पर्यावरण को ध्यान में रखकर हमें याद दिलाती है कि हम आधुनिकता के इस दौर में आगे तो बहुत बढ़ गए परंतु पर्यावरण और प्रकृति की सुंदरता से हम दूर हो गए। अगली कहानी हमें यह सिखा जाती है कि डरने से कुछ नहीं होता अगर हम किसी बात की तह में जाएंगे, हमें सच्चाई अवश्य पता चल जाएगी। ऐसे ही 'गिरगिट जीत गया' मैं दोस्ती का महत्व के बारे में बताया गया 'ओल्ड इज गोल्ड' कहानी में पुरानी चीज का महत्त्व बताया गया है और उनकी इज्जत करना सिखाया गया है। ऐसे ही 'नारियल की गवाही' कहानी में नई टेक्नोलॉजी की बात की गई है। एक कहानी के अंदर भी कहानी है, डा. राधाकृष्णन की। मौलिक कहानियों के बीच यह कहानी जमी नहीं।

वैसे सारी कहानियां एक से बढ़कर एक हैं और बच्चों को बांधे रखने में सक्षम हैं।

पुस्तक की भाषा सहज और सरल है, हालांकि कई जगह कठिन शब्दों को भी प्रयोग है। परंतु कहानी कहने का ढंग ऐसा है कि इस तरफ ध्यान नहीं जाता। पुस्तक के चित्र ब्लैक एंड ह्वाइट हैं पर अच्छे हैं।

सोने जैसा जैसलमेर

राजस्थानी नर्तकी

जैसलमेर मरूस्थल देखने की चाह रखने वालों के लिए स्वर्ग है। मैं पहाड़ देख चुका था। समुद्र और नदियों की सैर कर चुका था। अब इच्छा थी रेतीले स्थान यानी रेगिस्तान की सैर की। तो मैंने प्रोग्राम बनाया जैसलमेर जाने का।

जैसलमेर का इतिहास

जैसलमेर की स्थापना रावल जैसल ने 1156 ई. में की थी। जैसलमेर को कभी-कभी भारत का स्वर्ण शहर कहा जाता है क्योंकि यहां पीले बलुआ पत्थर का उपयोग किले और नीचे के शहर दोनों की वास्तुकला में किया गया है। दोनों में एक निश्चित सुनहरी-पीली रोशनी होती है। सूरज की रोशनी में ये सोने सा चमकते हैं।

जैसलमेर में देखने को बहुत कुछ है।

रेगिस्तान की सैर

शाम को रेगिस्तान में डूबता सूरज देखना अलौकिक लगता है। ऊंट पर बैठकर शाम को रेगिस्तान की सैर यूं लगता है जैसे कि पिघले सोने पर आप घूम रहे हैं। यहां आप ऊंट से उतरकर रेत पर चहलकदमी भी कर सकते हैं। रेत के ऊंचे-नीचे टीलों के पास घूमकर प्रकृति का आनंद लेने में बड़ा आनंद आता है।

यहीं पर डेजर्ट नेशनल पार्क भी हैं। यहां आपको खूब हिरन देखने को मिलते हैं।

शाम को यहां का नृत्य-संगीत का कार्यक्रम देखकर राजस्थानी खाने का आनंद भी लिया जा सकता है।

जब रेगिस्तान से वापस शहर की ओर लौटते हैं, तो देखने को खूब दर्शनीय स्थल हैं।

कुलधरा

कुलधरा जैसलमेर जिले का एक गांव है, जो कभी ऐसा उजड़ा कि फिर कभी नहीं बसा। 13 वीं शताब्दी के आसपास स्थापित, यह कभी पालीवाल ब्राह्मणों का एक समृद्ध गांव था। जैसलमेर राज्य के मंत्री सलीम सिंह द्वारा किए गए अत्याचारों के कारण, 19 वीं शताब्दी की शुरुआत में इसे छोड़ दिया गया था। वर्षों से, कुलधरा ग्राम स्थल

रेगिस्तान में ऊंट की सैर

जैसलमेर शहर से लगभग 18 किमी दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। शहर की दीवार के अवशेष साइट के उत्तर और दक्षिण की ओर देखे जा सकते हैं।

बड़ा बाग

इसे को बाराबाग भी कहा जाता है अर्थात भव्य उद्यान। बड़ा बाग एक छोटी सी पहाड़ी पर स्थित है। जैसलमेर से लगभग छह किलोमीटर दूर स्थित यह एक उद्यान परिसर है। जैसलमेर राज्य के महाराजाओं द्वारा निर्मित शाही छतरी के कारण यह बड़ा भव्य दिखता है। दरअसल ये छतरियां वास्तव में वो जगह है जहां शाही परिवार के सदस्यों का अंतिम संस्कार कर वहां स्मारक बना दिया जाता था। इसके बाहर आम का एक बाग है, जो रेगिस्तान में हरियाली का एहसास कराता है। स्मारकों को बलुआ पत्थर से बनाया गया है, जिसके कारण ये बड़े आकर्षक लगते हैं।

लोधुर्वा जैन मंदिर

लोधुर्वा जैन मंदिर लोधरुवा गांव में है। लोधुर्वा को रावल देवराज, भाटी वंश द्वारा राजधानी के रूप में स्थापित किया गया था। इन मंदिरों का निर्माण 9वीं शताब्दी में किया गया था। इन मंदिरों को महमूद गजनी ने भी लूटा था। 1152 में मंदिर को नष्ट कर दिया गया था। 1615 ईस्वी में, मंदिरों की मरम्मत कर जीर्णोद्धार किया गया। लोधुर्वा जैन मंदिर को राजस्थान में जैन वास्तुकला का सबसे अच्छा उदाहरण माना जाता है। लोधुर्वा पार्श्वनाथ पार्श्वनाथ मूर्तियों की 108 प्रमुख मूर्तियों में से एक है।

युद्ध संग्रहालय

जैसलमेर युद्ध संग्रहालय का निर्माण भारतीय सेना के डेजर्ट कोर द्वारा किया गया है। यह 24 अगस्त 2015 को भारतीय सेना द्वारा राष्ट्र को समर्पित किया गया था। संग्रहालय में युद्ध में प्रयोग किए गए वाहन प्रदर्शित हैं। इसके अलावा 1965 और 1971 के युद्ध के दौरान दुश्मन देश के पकड़े गए उपकरण यहां रखे हैं।

जैसलमेर का किला

जैसलमेर शहर पीले बलुआ पत्थर की एक पहाड़ी पर खड़ा है। प्राचीन जैसलमेर किला यहीं है। इस किले में एक शाही महल और कई अलंकृत जैन मंदिर हैं। किले और नीचे के शहर दोनों के कई घर और मंदिर बारीक नक्काशीदार बलुआ पत्थर से बने हैं। यह शहर थार रेगिस्तान (महान भारतीय रेगिस्तान) के केंद्र में स्थित है और किले के निवासियों सहित इसकी आबादी लगभग 78,000 है। इस किले को सोनार किला भी कहते हैं क्योंकि धूप पड़ने पर यह सोने की तरह चमकता है।

इस किले के अंदर सबसे दिलचस्प आकर्षणों में से एक सात परस्पर जुड़े जैन मंदिरों की आश्चर्यजनक श्रृंखला है जो 15 वीं और 16 वीं शताब्दी के हैं। इसे देखते मन नहीं थकता।

रेगिस्तान में सूर्यास्त

कुलधरा

लोधुर्वा जैन मंदिर

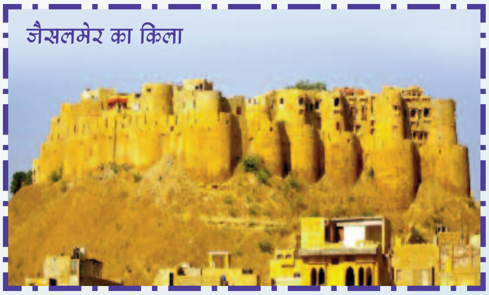
जैसलमेर का किला

बड़ा बाग

लकड़ी जीवाश्म पार्क

यह भारत का एक राष्ट्रीय भूवैज्ञानिक स्मारक है। यह शहर से 17-18 किमी दूर अकाल गांव में जैसलमेर के जीवाश्म बेल्ट में स्थित है। इस क्षेत्र में टेरोसॉर के जीवाश्म और पैरों के निशान भी पाए गए हैं। इसके अलावा एक दर्जन जीवाश्म लकड़ी के टुकड़े हैं जो 180 मिलियन वर्ष पहले के हैं। लकड़ी के जीवाश्मों से पता चलता है कि यह क्षेत्र कभी समुद्र के नीचे रहा होगा।

गडसीसर झील

रावल गडसी सिंह द्वारा 1367 में बनाई गई, यह एक सुंदर वर्षा जल झील है, जो अमर सागर के छोटे मंदिरों से घिरी हुई है। पहले यह झील जैसलमेर का मुख्य जल स्रोत हुआ करती थी। कृषि के लिए पानी की बढ़ती मांग के कारण, झील के सूखने का खतरा बढ़ गया है

डेजर्ट फेस्टिवल

जैसलमेर का डेजर्ट फेस्टिवल राजस्थान का सबसे प्रसिद्ध सांस्कृतिक और रंगीन आयोजन है। इसमें ऊंट दौड़, पगड़ी बांधने और मिस्टर डेजर्ट प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं। यह हर साल फरवरी के महीने में आयोजित किया जाता है। यह त्योहार राजस्थानी लोक गीतों और नृत्य को प्रदर्शित करता है और विदेशी पर्यटकों के लिए बहुत बड़ा आकर्षण है।

ऐतिहासिक हवेलियां

जैसलमेर किले के अंदर और बाहर दोनों जगह स्थित अपनी शानदार ऐतिहासिक हवेलियों के लिए भी जाना जाता है। कई संकरी गलियों में उत्तर की ओर केवल 10 मिनट की पैदल दूरी पर ये हवेलियां पाई जा सकती हैं। इस क्षेत्र में, 19वीं शताब्दी की पटवों की हवेली शहर की सबसे बड़ी और सबसे महत्वपूर्ण हवेली है, जिसमें एक धनी जैन व्यापारी और उसके बेटों द्वारा निर्मित पांच हवेलियां शामिल हैं। सालिम सिंह की हवेली (मोती महल) और नथमल की हवेली भी देखने लायक हैं। नथमल की हवेली के अंदर, सुंदर सोने की पेंटिंग एक आकर्षण हैं।

जैसलमेर का किला

जैसलमेर का किला

सालिम सिंह की हवेली

गडसीसर झील

भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो- email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है, रेनू मंडल जी ने

मोहम्मद आसिफ, उम्र : 10, कक्षा : 4,
स्कूल : प्रा. वि. रिछा, ब्लॉक दमखोदा, बरेली, उत्तर प्रदेश

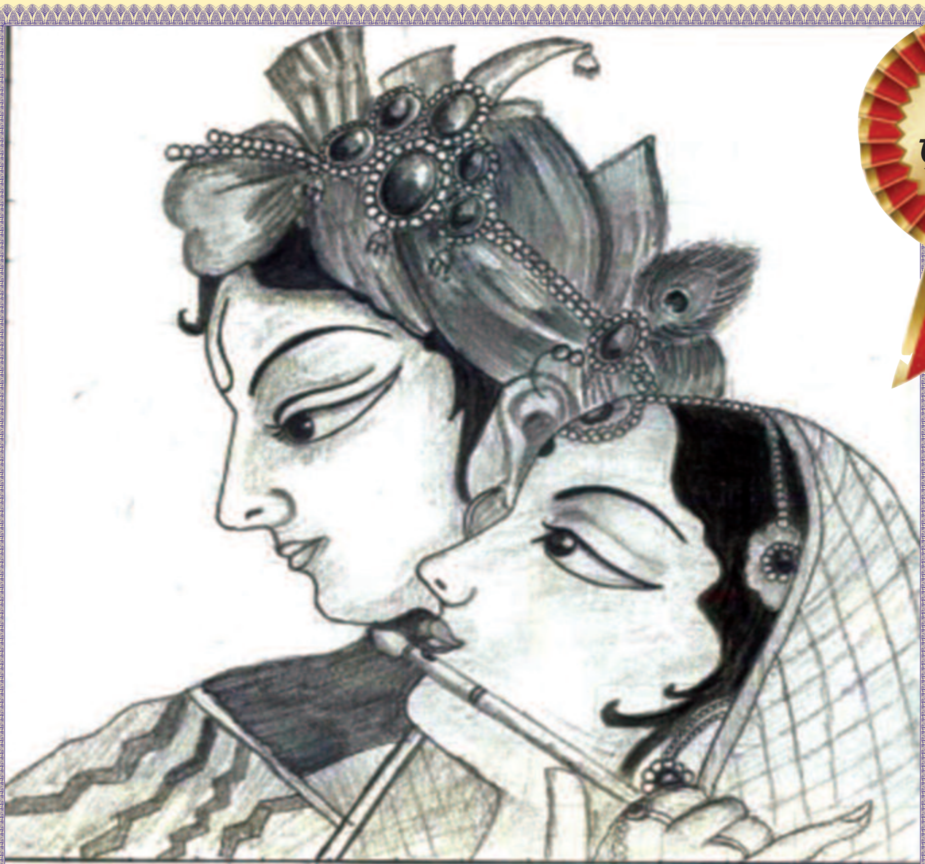

प्रथम पुरस्कार

आंचल

नाम : आंचल
उम्र : 13
कक्षा : 8,
अलमाईटी पब्लिक स्कूल
हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश

द्वितीय पुरस्कार

आदर्श मिश्रा
उम्र : 11 वर्ष, कक्षा : 5
प्राथमिक विद्यालय धुसाह1, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

आदर्श मिश्रा

हुमैरा मिर्जा
उम्र : 10, कक्षा : 5
प्राथमिक विद्यालय धुसाह1, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश,

हुमैरा मिर्जा

सविता यादव, कक्षा : 5, उम्र :11 वर्ष,
प्राथमिक विद्यालय, धुसाह1, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

पिंकी साहू, उम्र :11 वर्ष
कक्षा : 5, प्राथमिक विद्यालय, धुसाह1, बलरामपुर , उत्तर प्रदेश

बच्चों का दिल मोहने आई

नाम : साक्षी कांडपाल
उम्र : 14, कक्षा : 8,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

होली आई, होली आई,
बच्चों का दिल मोहने आई।
खुशियों की बौछार लाई।
नाच गाने की रुत लाई।
होली आई, होली आई।
लाल, गुलाबी, नीले, पीले रंगों से सब सजे हुए,
गुजिया, भांग खाने में सब मगन हुए।
मम्मी-पापा, भैया-भाभी, होली में सब मगन हुए है।
हर घर है ख़ुशियों की ठिठोली।
आओ मिलकर मनाएं होली।
चलो-चलो, सब पिचकारी को रंग भरकर तैयार रखें।
रंगों की बरसात में भीगने को तैयार रहें।
होली आई, होली आई,
हम बच्चों का दिल मोहने आई।

जरा लफ्ज़, जरा पैसे

कुछ लफ्ज़ उधार के थे,
और कुछ पैसे भी।
वो नंगा बिक गया ,
कुछ इमाम के लिए।
ना सोच की कमी थी,
ना ही कल्पनाशक्ति की।
वो सरे आम बदनाम हो गया,
चंद लफ्जों की उधारी में।
दिल के ख्वाब खत्म,
रूह की चाह खत्म।
लालच न हो सका खत्म,
ठाकुर के पैसों से।
गुलाब सा चेहरा,
काटों सी हालत।
वह काटें भी न दिखा पाया,
अपनों की जरूरतों में।
सर हिला के हां ,
सर हिला के ही ना।
उसके उधार के लफ्ज़ भी खत्म हो गए,
जब नीलाम होने की बारी आई।

नाम : राधा पोखरिया
उम्र : 15, कक्षा : 11,
स्कूल : नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखंड

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ-साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609
रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं--

- संरक्षक बनकर
- मासिक अनुदान देकर
- यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर
- विज्ञापन देकर
- हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर
- किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें--

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**